بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मामुलात

सिलसिला ए आलोया नकशबंदिया

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफिकार अहमद
नकशबदो
मुजद्दिदी

بسم الله الرحمن الرحيم

विषय सुची

हजरत दामत बरकातुहु की बात

जब भी किसी सालिक को सिलसिला-ए-आलिया नक्शबन्दिया में बैत किया जाता है तो उसे कुछ असबाक़ व मामूलात बताये जाते हैं जिन पर पाबन्दी से अमल करना इस के लिऐ ज़रुरी होता हैं । बैत के वक्त इस मामुलात का तरीका कभी मिसाली कभी तफ्सीलन सालिक को बता तो दिया जाता है । लेकिन ऐसा मौका मिलना जरुरी नहीं होता के हर मुरीद को उन की तफसील समझाई जा सकें । चुंके इन मामुलात पर एक सालिक की आईन्दा रुहानी जिन्दगी का मदार होता है । इस लिऐ जरुरी मालुम हुआ के सालिकीन की रेहनुमाई के लिए इस पर बाक़ाइदा एक किताब लिख दी जाए । जिस में इन मामुलात का तरीक़ा कार उनकी फ़ज़ीलत उनकी एहमियत व फवाइद और उन के मक़सद को तफसील के साथ बयान कर दिया जाए ताके सालिक उन मामुलात को पुरे ज़ौक़ व शौक़ के साथ उनकी गर्ज़ को समझते हुऐ सही तरीक़े से और बाक़ाइदगी से करता रहे । फ़क़ीर के खयाल में यह किताब हर सालिक के पास होनी चाहिए । और इसे सिर्फ इस्लाही किताब ही नही बल्के शैख की तरफ से पहला हिदायत नामा समझते हुऐ पढना चाहिए । उम्मीद है के अमल करने वालों के लिए यह किताब तरक़्क़ी का सबब बनेगी ।

यह बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है जो चाहो लगा दो डर कैसा

गर जीत गऐ तो किया कहेंगे गर हार गऐ तो मात नही

दुआ गो व दुआ जो

फ़क़ीर ज़ुल्फ़ीक़ार अहमद नक़्शबन्दी मुजदददी

كان الله له عوضا عن كل شیء

الله

मामुलात- ए -सिलसिला-ए-आलिया नक़्शबंदिया

बैत का अमल कोई रस्मी और रिवाजी चोज नहीं बल्के नबी ﷺ की सुन्नते मुबारका है । इस का मक़्सद अल्लाह तआ़ला की रज़ा नबी ﷺ की इत्तबा और अपनी इस्लाह होता है । इस मक़्सद के हुसुल के लिऐ सालिक को कुछ मामुलात और वज़ाइफ़ बताऐ जाते हैं । जिन पर बाक़ाइदगी से अमल करने से सालिक की जिन्दगी में इस्लामी ईमानी, और कुरआ़नो इन्क़लाब पैदा हो जाता

है । मुहब्बते इलाही इस तरह अंग अंग में समा जाती है के आँख का देखना, जबान का बोलना और पाँव का चलना बदल जाता है । सालिक युं मेहसुस करता है के मेरे उपर दिखावा और दोरंगी का गिलाफ चढा हुआ था जो उतर गया है । और अन्दर से एक सच्चा और सच्चा इन्सान निकल आया है । वह मामुलात इस तरह है ।

(1) वकुफ़े क़ल्बी

(2) मुराकबा

(3) तिलावते कुरआन

(4) इस्तग़फ़ार

(5) दुरुद शरीफ़

(6) राब्ता -ए-शैख़

जिस तरह एक बीज में दरख्त बनने की सलाहियत मौज़ुद होती है । अगर उस बीज को किसी माली के जेरे निगरानो चन्द दिन जमीन में परवरिश पाने का मौक़ा मिल जाऐ तो वह फल फुल वाला दरख्त बन जाता है । इसी तरह सालिक चन्द दिन शैख के जेरे साय में इन मामुलात व वजाइफ को कर ले तो उस की शख्सियत पर अखलाक़ के फुल लगते हैं ।

यह मामुलात इन्सान की बातनी बीमारीयों के इलाज के लिए एक तीर बहदफ (Patent) नुस्ख़ा है । उन का फायदामन्द होना ऐसा ही यकीनी है जैसे चीनी का मीठा होना यकीनी है। दुनिया के करोडों

इन्सानों ने अब तक इस नुस्खे को आजमाया और इस से फायदा पाया है। लेकिन अगर कोई सालिक इन मामुलात व वजाइफ की पाबन्दी ही ना करे और फिर शिकायत करे के हमें फायदा नहीं हो रहा है तो इस में शैख की क्या कुसूर है ? इस की मिसाल तो ऐसे मरीज की सी है जो किसी बहुत बडे डॉटर से नुस्खा तो लिखवा ल , लेकिन जेब में डाले फिरे और इस्तेमाल ना करे । भला जेब मे रखा हुआ नस्खा कैसे फायदा दे सकता है । जब तक के उसे इस्तेमाल ना किया जाऐ ।

इन मामुलात व वजाइफ का बडा फ़ायदा यह ह के करने में बहुत ही आसान हैं । लेकिन बाकाइदगी से करने से पुरी की पुरी शरीअत पर अमल करना आसान हो जाता है । और यह बात दो और दो चार की तरह ठोस है । जिसे यकीन ना हो आजमा कर देख ले ।

सलाए आम है याराने नुक्ता दां के लिए

अब इन मामुलात व वजाइफ का तरीका दलाइल और फजाइल बयान किऐ जाते हैं।

वकफे कल्बी

हर घडी हर आन यह धियान मेरा दिल कर रहा है अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह ।

वकुफ का लफ्जी माना होता है ठहरना फिर वकुफ कल्बी के लफ्जी माना हुए दिल पर ठहरना । इस से मुराद है अपने दिल की लगातार निगेहबानी करना और दिल की तवज्जह अल्लाह की तरफ रखना। तरीका इस का यह है के हर वक्त कल्बजो बाऐं पिस्तानके निचे पहलु की तरफ दो अंगल के फासले पर है । अल्लाह तआ़ला की याद का धियान रखे के मेरा दिल अल्लाह,अल्लाह कर

रहा ह ।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की फितरत ऐसी बनाई के उस का दिल किसी लमहे भी किसी सोच और फिक्र के बगैर नहीं रह सकता । वह हर वक्त किसी ना किसी ख्याल के ताने बाने बनता रहता है । वकुफ कल्बी में इन्सान इस बात की मश्क़ करता है के दिल को हर वक्त की फुजूल सोचों से हटा कर अल्लाह की याद की तरफ लगाया जाए गोया अल्लाह की जात का खयाल इन्सान की सोच में रच बस जाए ।

फरमाया

ना गर्ज़ किसी से ना वास्ता मुझे काम अपने ही काम से

तेरे जिक्र से तेरी फिक्र से तेरी याद से तेरे नाम से

मुब्तदी के लिऐ यह जरा मुश्किल होता है । लेकिन लगातार कोशिश करने से यह काम आसान हो जाता है । हत्ता के सालिक जाहिरी तौर पर अपनी जिन्दगी के काम काज करने में मशगुल रहता है । जबके उस का दिल अल्लाह की याद में मशगुल होता है उसे कहते हैं । दस्त बकार दिल बयार यानी हाथ काम काज में मशगुल और दिल अल्लाह की याद में मशगुल यहाँ यह सवाल पैदा होता है के यह कैसे मुमकिन है के इन्सान अपने कामों में भी मशगुल रहे जबके उसका दिल अल्लाह तआ़ला की याद में मसरुफ रहे? इस बात को समझाने के लिऐ कुछ मिसालें दी जाती हैं ।

मिसाल नम्बर :- 1

गाडी के ड्रायवर की मिसाल पर गौर करें वह गाडी भी चला रहा होता है । और अपने साथी से बातें भी कर रहे होता है । इस के हाथ पाँव हरकत कर रहे होते है । और मौक क मुनासिबत से गाडी के स्टेअरिंग ,गियर ,कलच ,ब्रक को हरकत दे रहे होते हैं । बजाहिर वह बातें कर रहा है । लेकिन अंदरूनी तौर पर उस की सोच गाडी की ड्रायविंग की तरफ लगी हुई है इसी लिए गाडी बगैर किसी हादसे के अपनी मन्जिल की तरफ चलती रहती है ?

मिसाल नम्बर :- 2

देहातों में बाज अवकात औरतें घडा सर पर रख कर दुर से पानी भर कर लाती हैं बाज औरतों को घडा उठाने की इतनी पराकतिस हो जाती हैं के घडे को वह हाथ से पकडे बगैर सर पर रख कर चलती है । इस दौरान वह आपस में बातें भी करती है । और ऊची ऊची जगहों से भी गुजरती है लेकिन गाफील तौर पर भी उनकी ऐक तवज्जह अपने घडे के बेलनस की तरफ भी लगी होती है जहाँ कहीं थोडा सा भी बेलनस में बदल होता है । उन का जिस्म खुद उस को दुरुस्त कर लेता है और घडा गिरने से मेहफुज रहता है ।

मिसाल नम्बर :- 3

मान ल कोई औरत अपने बच्चे को तय्यार करके स्कुल भेजती है । स्कुल में उस बच्चे का रिझल्ट आने वाला है । अब बच्चे के वापस घर आने तक वह औरत घर के काम काज में भी मशगुल होती है । लेकिन उस का धियान और उसकी याद लगातार अपने बच्चे की तरफ लगी रहती ह के अब मेरा बच्चा स्कुल पहुंच गया होगा । अब रिझल्ट निकला होगा । अब वह वापस आ रहा होगा वगरह वगैरह । अब बजाहिर वह घर के काम काज में मशगुल है लेकिन साथ साथ उस की सोच बच्चे की तरफ भी लगी हुई है ।

इन मिसालों से यह साबित होता है के सालिक भी अगर तवज्जह और मेहनत करे तो जिन्दगी की कामकाज के साथ साथ अपनी सोच को हर वक्त अपने दिल की तरफ लगाये रख सकता है। के मेरा दिल अल्लाह

अल्लाह कर रहा है। जब यह मेहनत ,अभ्यास पुख्ता हो जाता है। तो फिर सचमुच उसे हर वक्त दिल से अल्लाह अल्लाह की आवाज सुनाई देती है ।

जिन्दगी है अमर अल्लाह जिन्दगी एक राज है

दिल कहे अल्लाह अल्लाह यह जिन्दगी का साज़ हैं

अगर किसी को मुश्किल मेहसूस हो के हर वक्त वकुफ कल्बी नहीं रख सकता तो वह आहिस्ता आहिस्ता उसे बढाऐ ।

मसलन पहले दिन वह नियत करे के आज में एक घन्टा वकुफ कल्बी से रहने की कोशिश करूंगा दुसरे दिन वक्त को बढा दे तीसरे दिन जियादा बढा दे इस तरह करते करते एक वक्त आएगा के उसे हर वक्त वकुफ कल्बी से रहने की आदत पड जायगी ।

वकुफ कल्बी से रहने का मकसद यह होता है के बाहरके खतरात का दिल में दखल ना हो इन्सान के दिल से गफलत निकल जाऐ । और अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ किसी किसम की तवज्जह बाकी ना रखने से सालिक की रूहानी उडान कई गुना बढ जाती है । और उसे बहुत जल्द इनाबत इलल्लाह और रुजु इलल्लाह नसीब हो जाता है इस लिए बाज मशाइख ने उसे वासिल बिल्लाह होने का चोर दरवाजा

कहा है ।

कुरआ़न मजीद से दलाइल

मोमिनीन को जिक्र कसीर का हुक्म है ।

कुरआ़न पाक में मोमिनीन को जिक्र कसीर का हुक्म दिया गया है इरशादे बारी है ।

يا أيها الّذين آمنوا اذكروا الله ذكراً كثيراً :(अल अहजाब)

(ऐ ईमान वालो अल्लाह का जिक्र कसरत से करो)

एक जगह इरशाद फर्माया ।

واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون ۝

और अल्लाह का जिक्र कसरत से करो ताके तुम कामियाब हो जाओ ।

इस आयत मे उज़कुरु जमा याने जियादा का सेगा भी है । और अमर का याने हुक्म भी गोया मोमिनीन को जिक्र कसीर का हुक्म दिया जा रहा है । मजीद यह के जिक्र कसीर करने वालों के साथ मगफिरत और जन्नत का वादा किया जा रहा है ।

अब सवाल पैदा होता है के जिक्र कसीर का क्या मतलब है ? क्या हर नमाज के बाद थोडी देर जिक्र कर लिया करें? या सबह व शाम जिक्र क्या करें या इतना जिक्र करें के थक जाऐं ? आखिर क्या करें ? इस

आयत में मुफस्सिरीनमेंसे हज़रत मुजाहिद رحمۃ اللہ علیہ जिक्र कसीर की तारीफ युं बयान करते हैं ।

الذكر الكثير ان لا ينساه بحال

जिक्र कसीर यह है के उसे किसी हाल में भी ना भुले ।

किसी हाल में भी ना भुलने से माना क्या है? इन्सान की तीन बुनियादो हालतें हैं या वह लेटा होगा, या वह बैठा होगा, या वह खडा होगा, हर हाल में जिक्र करने से माना लेटे, बैठे, खडे, अल्लाह को याद करे यही अकलमन्दों की निशानी बताई गई है ।

कुरआ़न पाक म अकलमन्दों के मुतालिक फर्माया गया है ।

الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم

वह बन्दे जो खडे बैठे और लेटे अल्लाह का जिक्र करते हैं ।

मुफस्सिर सावी رحمۃ اللہ علیہ

ने इस आयत के तहत फर्माया है के अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर जो चीज भी फर्ज की है । उसके लिये अल्लाह तआ़ला ने हद मुकर्रर कर दी है । और हालते बिमारी में उनको माज़ुर समझा है सिवाऐ जिक्र के , के ना तो कोई उस के वास्ते हद मुकर्रर की है , और ना किसी को

उस के ना करने में माजूर समझा है । सिवाय मजनून के इसी लिऐ उन को अल्लाह ने हर हाल में जिक्र के लिऐ हुक्म किया है और बताया है मोमिन याद करते हैं अल्लाह को खडे हुऐ और बेठे हुऐ करवटों पर और इस में इशारा है इस हुक्म की तरफ के जिक्र की शान और फजीलत बहुत बडी है ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ इस आयत के तहत फरमाते है ।

الّذین یذکرون الله قیاما وقعودا وعلی جنوبهم ای باللیل والنهار فی البر والبحر والسفر والحضر

والغنی والفقر والمرض والصحة والسر والعلانیة

जो लोग खडे बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते है । यानी रात और दिन में सुखा और बारिश में सफर और हजर में मालदारी और फकिरी में मर्ज में और सेहत में अकेले(खलवत) में और मजमे (जलवत) में साफ जाहिर है ऐसा जिक्र तो फिर जिक्र कल्बी और जिक्र खफी ही हो सकता है । जो हर हाल में किया जा सके लिहाजा मालुम हुआ के क़ुरआन पाक में जिक्र कसीर का जो हुक्म दिया गया हें । उस की तफसीर जिक्र कल्बी, जिक्र खफी यानी वकुफ कल्बी ही है । इस को करने का क़ुरआन मजीद में हुक्म दिया गया है ।

इर्शाद बारी तआला है ।

فاذکروا الله قیاماً و قعوداً و علی جنوبکم

अल्लाह को याद करो खडे बैठे और लेटे हुऐ।

इससे साबित हुआ के वकुफ कल्बी के लिऐ क़ुरआन मजीद में हुक्म फर्माया गया है।

अहादीस से दलाइल

मुतअद्दिद अहादीस में जिक्र खफी जिक्र कल्बी की बाकाइदा सबक मिलता है । मसलन एक हदीस में हुजूर ﷺ का इर्शाद नकल किया गया के अल्लाह तआ़ला को जिक्र खामिल से याद किया करो किसी ने दरयाफ्त किया, जिक्र खामिल क्या है ? इर्शाद फर्माया जिक्र खफी ।

हज़रत उबादा और हज़रत सअद رضي الله عنه से रिवायत ह के नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया बेहतरीन जिक्र वह है जो बुलंदी का दरजा रखता हो।

बुखारी शरीफ की हदीस है :-

हजरत आइशा رضي الله تعالى عنها से रिवायत है के रसुल ﷺ

हर लमहे अल्लाह का जिक्र किया करते थे ।

इस हदीस पाक से पता चलता है के आप ﷺ की आदते मुबारका और सुन्नत हर वक्त यादे इलाही में मशगुल रहना थी । इस हदीससे तो यकीनन जिक्र कल्बी मुराद है , क्यों के बहुत से औकात ऐसे होते है जिन में इन्सान जुबानसे जिक्र नहीं कर सकता, इस लिऐ मशाएख उस पर अमल के लिये सालिकीने तरीकत को वकुफ कल्बी की मेहनत करवाते है । साबित हुआ के जिक्र कल्बी की तालीम कुरआन व हदीस के ऐन मुताबिक है खुश नसीब हैं वह हजरात जो इस को सीखने के लिऐ मशाएख के सर परस्ती में वक्त गुजारते हैं ।

जिक्र लिसानी (जुबानी) और जिक्र कल्बी (दिलमे)

जिक्र की दो किस्मे, हैं ।

जिक्र लिसानी और जिक्र कल्बी ।

फरमाया,

لِسانِي وقَلبِي يفْرحان بِذِكْرِها

وما الْمرء إلَّا قَلبُه ولِسانُه

मेरी जबान और मेरा दिल उस के जिक्र से खुश है । और आदमी के पास दिल और ज़ुबान ही तो होती है ।

अहादीस नबवी ﷺ

से जिक्र कल्बी की फजीलत की फजीलत जिक्र लिसानी पर साबित है ।

नबी ﷺ का इर्शाद है । वह जिक्र खफी जिस को फरिश्ते भी ना सुन सकें (जिक्र लिसानी से) सत्तर दरजे जियादा बडा है जब क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला तमाम मखलुक को हिसाब के लिए जमा फर्माएगा और किरामन कातिबीन आमाल नामे लेकर आयेंगे तो इर्शाद होगा के फलां बन्दे के आमाल देखो कुछ और बाकी हैं । फरिश्ते अर्ज करेंगे । हम ने तो कोई भी और चीज ऐसी बाकी नहीं छोडी जो लिखी ना हो मेहफुज ना हो तो इर्शाद होगा के हमारे पास एक नेकी ऐसी बाकी है जो तुम्हारे इल्म में नहीं है । वह जिक्र खफी है ।

अकली दलाइल

अकली तौर पर देखा जाऐ तो भी जिक्र कल्बी को जिक्र लिसानी पर फजीलत हासिल है । मसलन जिक्र कल्बी हर वक्त करना मुमकिन है । जबके जिक्र लिसानी मुमकिन नहीं मसलन जब सालिक खाना खा रहा होता है । बात कर रहा होता है या दुकान पर बठा गाहक से सौदा तय कर रहा होता है । तो वह ज़ुबान से एक वक्त में दो काम तो नहीं कर सकता , गुफ्तगु करे या जिक्र अल्लाह करे ज़ुबान से ऐक वक्त में एक काम ही मुमकिन है । जब के जिक्र कल्बी काम काज के दौरान लटे बैठे चलते फिरते हर हाल में किया जा सकता है ।

जिक्र लिसानी करते हुऐ ज़ुबान हिलेगी होंठ हरकत करेंगे हर वक्त यह डर रहेगा के किसी को पता ना चल जाऐ जबके जिक्र कल्बी का पता या तो करने वाले को होता है । या जिस का जिक्र हो रहा होता है उसे मालुम होता है ।

वह जिन का इश्क सादिक है वह कब फरयाद करते है

लबों पर मुहर खामोशी दिलों में याद करते हैं

एक रिवायत में आता है के जिक्र कल्बी फरिश्ते भी नहीं सुन सकते इन्हें एक खुशबु आती महसुस होती है । क़ियामत के दिन मआमला खुलेगा के यह तो यादे इ़लाही की खुशबु थी ।

मियाँ आशिक व माशुक रमजे अस्त

किरामन कातिबीन बाहम खबर नेस्त

(आशिक और माशुक में कुछ राज ऐसे होते हैं के वह किरामन कातिबीन को भी नहीं मालुम हो पाते)

इसी लिऐ जिक्र कल्बी को जिक्र खफी कहा जाता है ।

दर हकीकत जिसम इन्सानी मे याद का मकाम कल्ब है । जबके जुबान से उस का इजहार होता है । कभी किसी माँ ने बेटे से यह नहीं कहा के बेटा मेरी जुबान तुम्हें बहुत याद करती है । बल्के हमेशा यही कहेगी के बेटा मेरा दिल तुम्हें बहुत याद करता है मालुम हुआ के याद का मकाम इन्सान का कल्ब है । पस अकली दलाइल से भी साबित हुआ के जिक्र खफी अफ़ज़ल है जिक्र लिसानी से ।

फरमाया,

अज दरुं शो आशना व अज बेरुं बेगाना शो

इं तरीका जेबा रविश कम तर बुवद अन्दर जहां

(अन्दर से तो आशना हो बाहर से बेगाना हो यही तरीका बेहतर है और दुनिया में बहुत कम है)

जिक्र क फायदे

कसरते जिक्र के फवाइद भी अजीबोगरीब है चन्द बयान किये जाते है ।

जिक्र दिल की सफाई का सबब है ।

जिक्र का सब से बडा फायदा तो यह है के उस से इन्सान के दिल की जुल्मत दुर होती है । और आदमी को कल्बे सलीम नसीब होता है । चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﵁ से रिवायत ह के नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

لِكُلِّ شَيْءٍ صِقَالَة وصِقَالَةُ الْقُلُوبِ ذِكْرُ اللهِ

(हर चीज का एक सैकल (सफाईकार) होता है और दिल का सैकल अल्लाह का जिक्र है)

जब दिल साफ और रोशन हो तो उस को इबादात में लज्जत मिलती है । और खैर की हर बात उस पर असर करती है और दिल साफ ना हो तो इस गंदगी की वजहसे खैर की बात दिल पर असर नहीं करती है और ना वह इबादत व ताअत की तरफ माइल होता है । इसी लिए नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

إن في جسد بني آدم لمضغة إذا صلحت صلح الجسد كله وإذا فسدت فسد الجسد كله ألا وهي القلب

बेशक बनी आदम के जिस्म में गोश्त का एक लौथडा है । अगर वह दुरुस्त हो जाये तो सारा जिसम दुरुस्त हो जाता है । और अगर वह बिगड जाऐ तो सारा जिस्म बिगड जाता है । जान लो के वह दिल है ।

इसी बात को एक शायर ने युं कहा है :-

दिल के बिगाड ही से बिगडता है आदमी

जिस ने उसे संवार लिया वह संवर गया

जाकिर को अल्लाह तआ़ला याद् रखते हैं

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फर्माते हैं ।

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ

(तुम मुझे याद् करो में तुम्हे याद् करूंगा)

इस आयत में खुशखबरी है ,अहले जिक्र के लिए , के जब वह जिक्र कर हरे होते हैं । यानी अल्लाह को याद् कर रहे होते हैं तो अल्लाह भी उन्हें याद् कर रहे होते हैं ।

मुहब्बत दोनों आलम में यही जा कर पुकार आई

जिसे खुद् यार ने चाहा उसी को याद् यार आई

एक हदीस मुबारका में भी ऐसी ही खुशखबरी सुनाई गई है । हुज़ूर ﷺ का इर्शाद् है के हक तआ़ला इर्शाद् फर्माते ह के में बन्दा के साथ वैसा ही मआमला करता हुँ जैसा वह मेरे साथ गुमान करता है । और जब वह मुझे दिल में याद् करता है तो में भी उसे अपने दिल में याद् करता हुँ और अगर वह मेरा मजम में जिक्र करता है तो में उस मजमे से बेहतर यानी फरिश्तों के मजमे में उस का जिक्र करता हुँ और अगर बन्दा मेरी तरफ ऐक बालिश्त मुतवज्जह होता है तो में एक हाथ उस की तरफ मुतवज्जह होता हुँ और अगर वह मेरी तरफ चल कर आता है तो में उस की तरफ दौड कर चलता हुँ ।

किस कद्र खुश नसीब हैं वह लोग जो अल्लाह का जिक्र हर वक्त करते हैं । और अल्लाह तआला ऐसे बन्दों का जिक्र फरिश्तों की जमाअत में करते हैं ।

ज़ाकिर से अल्लाह तआला की दोस्ती

एक हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

أَنَا جَلِيسُ مَنْ ذَكَرَنِي

में उस शख्स का हमनशीं हुँ जो मुझे याद करता है ।

किस कद्र शर्फ की बात है के अल्लाह तआला ने अपने आप को अहले जिक्र का दोस्त ,जलीस व हमनशीं कहा । लिहाजा जिस शख्स के दिल में हर वक्त अल्लाह की याद होगी तो वह गोया हर वक्त अल्लाह का हमजलीस होगा । इसी को हुजूरी कहते हैं लेकिन गाफिल बन्दों और नफ्स के गिरफ्तारों को क्या पता के कुर्बे इलाही की लज्जतों का किया मआमला है ?

अनदलीब मस्त दानद कद्र गुल

चुगद रा अज गोशा विराना परस

फुल की कद्र तो मस्त बुलबुल ही खूब जानती है । जंगल के वीरान कोने की बाबत कुछ पुछना हो तो उल्लू से पुछो ।

लिहाजा हमें चाहिए के अपने दिलों से गफलत को निकाल फेकें । और उन्हें अल्लाह की याद से रोशन करे ताके अल्लाह के दोस्त बन जाएं ।

जिक्र से दाइमी हयात (हमेशा की जिंदगी) मिलती है

अबु मूसा رضي الله عنه से रिवायत है नबी ﷺ

ने फर्माया : (मुत्तफक़ अलैह)

مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهٗ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ

जो शख्स अल्लाह का जिक्र करता है और जो नहीं करता, उन दोनों की मिसाल जिन्दा और मुर्दे की सी है

यानी जिक्र करने वाला और जिक्र ना करने वाला मुर्दा है इस की तफ्सीर में उलमाने अलग अलग की हैं

बाज उलमा ने कहा ह के उस में दिल की हालत का बयान है ,के जो शख्स अल्लाह का जिक्र करता है उस का दिल जिन्दा है और जो जिक्र नहीं करता उस का दिल मुर्दा है ।

बाज उलमा ने फर्माया है के नफा व नकसान के ऐतबार से है के अल्लाह के जिक्र करने वाले को जिस ने सताया वह ऐसा ही है जैसे किसी जिन्दा को सताया के उस से इन्तकाम लिया जाएगा ।और गैर जाकीर को सताने वाला ऐसा है मुर्दा को सताये के वह खुद इन्तकाम नही ले सकता ।

बाज ने कहा है के इस में हमेशगी की जिन्दगी मुराद है के अल्लाह अल्लाह का जिक्र कसरत से करने वाले मरते नहीं बल्के वह इस दुनिया से परदा करने के बाद भी जिन्दों ही में रहते हैं जैसा के शोहदाके बारेमे इर्शाद है بَلْ اَحْيَاءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ वह जिन्दा है मगर तुम उनकी जिन्दगी का तसव्वुर नहीं रखते

बहरे हाल तमाम तफ्सीरोंका माना व मक्सद एक ही है जिस से जिक्र की फजीलत व फायदा जाहिर होता है

जिक्र इत्तमिनाने कल्ब की वजह है

इर्शाद बारी है

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْب

खबरदार , दिलों का इत्मिनान अल्लाह के जिक्र से जुडा हुआ है

इस आयते करीमा मे साफ तौर पर इस तरफ इशारा है के अल्लाह के जिक्र के बगैर सुकूने कल्ब मिल नहीं सकता

ना दुनिया से ना दौलत से ना घर आबाद करने से

तसल्लि दिल को होती है खुदा को याद करने से

लिहाजा जिस के दिल में अल्लाह की याद नहीं है वह दुनियावी ऐश व आराम के बावजूद सुकून की दौलत से मेहरुम रहता है

इत्तमिनाने कल्ब तभी हासिल हो सकता है जब अल्लाह का जिक्र कसरत से किया जाऐ आज दुनिया में बेसुकूनी की जो लहेर आई हुई है इस की हकीकी वजह यह है के अल्लाह की याद दिलों से रुख्सत हो गई है चुनान्चे इर्शाद बारी है

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكاً وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَعْمٰى

जिस ने मेरी याद से कुरआन से मुह फेरा उस के लिऐ तंगी वाली जिन्दगी है और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा खडा करेंगे

अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी مَعِيْشَةً ضَنْكاً तंगी वाली जिन्दगी के बारेमे समझाते हुऐ फर्माते है उस की जिन्दगी तंग कर दी जाती है गो दखन में उस के पास बहुत माल व दौलत और सामाने ऐश व इशरत नजर आऐ । उस के खिलाफ जिन के दिल की याद से नुरानी होते है वह फकीरी में भी अमीरी के मजे उठा रहे होते हैं

कितनी तस्कीन है वाबस्ता तेरे नाम के साथ

नीन्द कांटों पे आ जाती है आराम के साथ

जिक्र शैतान के खिलाफ हथियार है

हज़रतइब्ने अब्बास ﷠ से रिवायत है के नबी ﷺ ने फर्माया

اَلشَّيْطَانُ جَاثِمٌ عَلٰى قَلْبِ ابْنِ اٰدَمَ فَاِذَا ذَكَرَ اللّٰهَ تَعَالٰى خَنَسَ وَاِذَا غَفَلَ وَسْوَسَ (बुखारी)

शैतान आदमी के दिल पर जमा हुआ बैठा रहता है जब वह अल्लाह का जिक्र करता है तो यह पीछे हट जाता है और जब गाफिल होता है तो यह वसवसा डालना शुरु कर देता है

गुनाह की शुरुवात गुनाह के वसाविस से होती है , जो पुख्ता होकर अमली सुरत एख्तियार कर लेते हैं मशाएख जिक्र की कसरत इसी लिऐ

करवाते हैं के कल्ब इतना कवी हो जाऐ के उस में शैतान को वसवसे डालने का मोका ही ना मिले

एक बुजर्ग ने एक मर्तबा अल्लाह तआ़ला से दुआ की के शैतान के वसवसे डालने की सुरत मुझ पर जाहीर की जाऐ तो फिर उन्हों ने देखा के शैतान दिल के मुन्डे के पीछे बाऐं तरफ मछछर की सी शकल में बैठा हुआ है एक लम्बी सी सुंड मह पर है जिस सुई तरह से दिल की तरफ ले जाता है ,अगर उस को जाकिर पाता है तो जल्दी से उस को खींच लेता है और गाफिल पाता है तो वसाविस और गुनाहोंको इन्जक्शन की तरह उस में भर देता है

बडा उसुल यह है के इन्सान जब किसी दुश्मन पर काबु पा लेता है तो सब से पहले वह हथियार छीन लेता है जो खतरनाक हो इसी तरह जब शैतान इन्सान पर काबु पा लेता है तो यादे इलाही से गाफिल कर देता है इरशाद बारी है

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ

उन पर शैतान गालिब आया और उन को यादे इलाही से गाफिल कर दिया

जिक्र मोमिन का हथियार है इसी के जरीऐ शैतानी हमलों से बचना मुमकिन है इर्शादे बारी है

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ

बेशक मुत्तकी लोगों पर जब शैतान की जमाअत हमलावर होती है तो वह यादे इलाही करते हैं पस बच निकलते हैं

जिक्र अफ़ज़ल तरीन इबादत है

हज़रतअबु सईद رضي الله عنه एक हदीस रिवायत करते हैं के

سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَیُّ الْعِبَادِ اَفْضَلُ دَرَجَۃً عِنْدَ اللّٰہِ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ قَالَ الذَّاکِرُوْنَ اللّٰہَ
کَثِیْراً ۔ قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ وَمِنَ الْغَازِیْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ قَالَ لَوْ ضَرَبَ بِسَیْفِہٖ فِی الْکُفَّارِ وَالْمُشْرِکِیْنَ حَتّٰی
یَنْکَسِرَ وَیَخْتَضِبَ وَمَا لَکَانَ الذَّاکِرُوْنَ اَفْضَلُ مِنْہُ دَرَجَۃً

रसुल صلى الله عليه وسلم से सवाल किया गया के क़ियामत के दिन अल्लाह के यहाँ किन लोगों का दर्जा जियादा होगा फर्माया जो लोग कसरत से जिक्र अल्लाह करते हैं में ने अर्ज किया के या रसुलल्लाह وسلمصلى الله عليه और जो लोग जिहाद करते हैं फर्माया के अगर चे मजाहिद कुफ्फार और मुशरिकीन पर तलवार चलाता रहे यहाँ तक के वह टूट जाऐ और खुन से तर हो जाऐ फिर भी जाकिरीन का दरजा अफ़ज़ल है

इस हदीस पाक में जिक्र कसीर करने वालों की फजीलत कितनी समझाकर बयान की गई है । ताहम इस का यह मतलब भी नहीं के जिहाद का वक्त आ जाए तो जिहाद ना करो और जिक्र ही करते रहो । जिक्र की फजीलत अपनी जगह लेकिन जिहाद के मौके पर जिहाद लाजिम है । और उसकी फजीलत बकिया आमाल पर गालिब आजाती है । अल्लाह का जिक्र माली सदका से भी अफजल है ।

हजरत अबु मुसा ﵁ से रिवायत है के नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

لَوْ اَنَّ رَجُلاً فِیْ حِجْرِہٖ دَرَاہِمُ یَقْسِمُہَا وَاٰخَرُ یَذْکُرُ اللّٰہَ لَکَانَ الذَّاکِرُ لِلّٰہِ اَفْضَلُ

एक शख्स के पास बहुत से रुपये हों और वह उन्हें तकसीम कर रहा हों । और दुसरा शख्स अल्लाह के जिक्र में मशगुल हो तो जिक्र करने वाला ज्यादा अफजल है । एक और हदीस शरीफ में हुजुर ﷺ का पाक इर्शाद है : जो तुम में से आजिज हो रातों को मेहनत करने से और बुखल की वजह से माल भी खर्च ना किया जाता हो । और बुजदिली की वजह से जिहाद में भी शिर्कत ना कर सकता हो उस को चाहिए के अल्लाह का जिक्र कसरत से करे ।

यानी हर किस्म की कोताही जो इबादाते नफलिया में होती है । अल्लाह के जिक्र की कसरत से उस की कमी पेशी को पुरी कर सकता है ।

हजरत अनस رضي الله عنه ने हुजुर ﷺ से नकल किया है के अल्लाह का जिक्र ईमान की अलामत है । और निफाक से राहत है और शैतान से हिफाजत है और जहन्नम की आग से बचाओ है । इन्हो मनाफों की वजह से अल्लाह का जिक्र बहुत सी इबादात से अफजल करार दिया गया है ।

जिक्र की वजह से अजाबे कब्र से निजात

कब्र की घाटी में भी जिक्र का नर काम आऐगा । और आदमी कब्र के अजाब से महफूज रहेगा हज़रत मुआज बिन जबल رضي الله عنه से रिवायत है के नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया ।

ما عمل ادمي عملاً انجى له من عذاب القبر من ذكر الله

अल्लाह तआ़ला के जिक्र से बढ कर किसी आदमी का कोई अमल अजाबे कब्र से निजात दिलाने वाला नहीं है ।

जिकरुल्लाह से गफलत का अजाम

कसरते जिक्र के फवाइद बेशुमार हैं इसी तरह जिक्र इलाही से गफलत बहुत बडे नुकसान और हसरत का सबब है मुतअद्दिद कुरआनी आयात और अहादीस में इस बारे में खबरदार किया गया है

अल्लाह तआ़ला के जिक्र से गफलत का सबसे पहला नुकसान तो यह होता है के गाफिल आदमी पर शैतान मुसल्लत हो जाता है , लिहाजा शैतान की संगत में रहने की वजह से वह आदमी भी शैतानी गिरोह में शुमार किया जाता है

استحوذ عليهم الشيطن فانسهم ذكر الله اولئك حزب الشيطن الا ان حزب الشيطن هم

الخسرون

उन पर शैतान का मुसल्लत हो गया पस उस ने उन को अल्लाह तआ़ला के जिक्र से गाफिल कर दिया यह लोग शैतान का गिरोह हैं खुब समझ लो के शैतान का गिरोह नुकसान पाने वाला है

जियादातर इन्सान को माल व औलाद की मशगुलियत ही अल्लाह की याद से गाफिल करती है लिहाजा इस बारे में तंबीह कर दी गई :

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ

ऐ इमान वालो तुम्हें तुम्हारे माल व औलाद अल्लाह तआ़ला के जिक्र से गाफिल ना करने पाऐं और जो लोग ऐसा करेंगे वही नुकसान पाने वाले हैं अल्लाह की याद से बेरुखी एखतियार करने और मुंह मोडन वालों को सख्त अजाब सी ताकीद सुनाई गई है चुनान्चे एक जगह पर अल्लाह तआ़ला फर्माते हैं

ومن يُعرض عَنْ ذِكْرِ رَبِّه يسلُكْه عذَاباً صعداً

और जिस शख्स ने अपने रब की याद से मुंह मोडा अल्लाह तआ़ला उस को सख्त अजाब में दाखिल करेगा

अबु हुरैरा ﷻ से रिवायत है के रसुल ﷺ

ने फर्माया

من قعد مَقعدا لَمْ يُذْكَرِ اللّٰهُ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللّٰهِ تِرَةٌ وَمن اضطجع مَضجعا لَا يذْكُرُ اللّٰهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللّٰهِ تِرَةٌ

जो शख्स एक मजलिस में बैठे और उस में अल्लाह को याद ना करे उस का यह बैठना अल्लाह की तरफ से अफसोस और नुकसान होगा और जो शख्स खाबगाह में लेटे इस तरह के अल्लाह को याद ना करे उस पर अल्लाह की तरफ अफसोस और नुकसान होगा :

जन्नतियों की हसरत

यह गफलत तो ऐसी बुरी चीज है के जन्नती लोगों को भी अपने उन लमहात पर अफसोस होगा जिन में उन्हों ने दुनिया में अल्लाह का जिक्र ना किया था हज़रत मुआज ﵁ कहते हैं के नबी ﷺ ने फर्माया :

لَيْسَ يَتَحَسَّرُ اَهْلُ الْجَنَّةِ اِلَّا عَلٰى سَاعَةٍ مَّرَّتْ بِهِمْ لَمْ يَذْكُرُوا اللّٰهَ تَعَالٰى فِيْهَا

जन्नत में जाने के बाद अहले जन्नत को दुनिया की किसी चीज का भी गम और अफसोस नहीं होगा सिवाय उस घडी के जो दुनिया में अल्लाह के जिक्र के बगैर गुजर गई हो

किसी ने किया खुब कहा है

फिराक दोस्त अगर अन्दुक अस्त अन्दुक नेस्त

मयाने दीदा अगर नीम मोसत कमतर नस्त

दोस्त की जुदाई अगर थोडी देर के लिए भी हो वह थोडी नहीं है जैसा के आँख में अगर आधा बाल भी हो तो वह कम नहीं है

मुराकबा

हर तरफ से हट कट कर अल्लाह की रहमत के इन्तजार में बैठना

मुराकबा को फिक्र के साथ जोड दिया जाता है क्यों के उसकी असलीयत फिक्र ही है किसी खास फिक्रमें पुरी तरहसे मुतवज्जह हो जाना हत्ता के इतना बेनियाज हो के इसी हाल में मजनूं हो जाऐ

फिक्र के मामलेसे जुडी बातें

बुनियादो तौर पर फिक्र का तआल्लुक इन्सान के दिल से है गौर व फिक्र की सलाहियत अल्लाह ने सिर्फ इन्सान को बख्शी है दोगर हैवानात को यह नेअमत नसीब नहीं है इन्सान की फिकरी सलाहियतें जब किसी एक खास पाईंटपर जमा हो जाती हैं तो यह अजीबो गरीब गल खिलाती हैं इस की बहुत सी मिसालें हमें दुनिया में नजर आ सकती हैं

साइन्सदां अपनी सोचनेकी सलाहियतों को जब इन चीजोंको समझने की तरफ लगाते है तो नऐ नऐ नजरिय्यात और कानुन पेश करते हैं जिन की बुनियाद पर वह नई खोज और कल्पना कर डालते है जैसे आइन्सटाइन एक मशहुर गणितज्ञ था उस ने अपनी फिक्र को फिजिक्स के फारमुलों की तरफ लगाया तो एक ऐसी थेअरी बनादी जो चीज का विस्तार और ताकत के तालुक को जाहिर करती थी जिस के बनियाद पर बाद में ऐटमी पावर स्टेशन बनाऐ गऐ इसी तरह और कई हैरतंगेज खोज ऐसी है जो फिक्र के लगातार इस्तेमाल के नतीजे में सामने आयी

हिन्दु जोगी गियान धियान की बाज ऐसी मुशक्कतें करते हैं के उनको ख्यालात के जरीऐ दुसरों पर अपना असर डालने का हुनर हासिल हो जाता है । हकीकतन वह यह सारा कुछ फिक्र की मशक की वजह से करते हैं

हमारे ही समाज में बहुत से शोब्दाबाज यानी करतब दिखानेवाले ऐसे नजर आ जाते हैं जो मुख्तलिफ मकामात पर अपने हैरान कर देनेवाले करतब दिखा कर लोगों से इनाम वुसूल कर रहे होते हैं और बाज जगहों पर ऐसे आमिल होते हैं जो लोगों के दिमाग की सोच बताकर बडी करनीवाले मशहूर हो जाते हैं लेकिन यह भी फिक्र के करिश्मे हैं

यह साइन्स का दौर है । चुनान्चे इसी खोज के नतीजेमे टेली पेथी और हिप्नॉटिझम जैसे उलुम भी मालूम हो चुके हैं इन में अलग अलग मशक्कतों के जरीऐ आदमी को अपनी तवज्जोह एक जगह पर जमा कर के दुसरे जेहन और नफसियात पर असर अन्दाज होने के तरीके सिखाऐ जाते हैं

बाज मगरिबी मुलकोमें अब मुजरिमों की जेहनको समझनेके लिऐ बाकाइदा हिप्नॉटिस्ट माहिरीन की मदद हासिल की जाती हैं

मगरिब में जेहनी बीमारी मसलन दबाव से नजात के लिए और जेहनी सुकून हासिल करने के लिए माहिरीने इरतिकाजे , फिक्र की मशक करवाते है जिसे वह मेडीटेशन कहते है इस लिऐ बाकाइदा अब मेडीटेशन कलब बनने शुरु हो गऐ हैं जिस में बीमारोको को अलग अलग खयालात की ऐसी मेहनत करवाई जाती हैं के वह जेहनी सुकून हासिल कर सकें

फिक्र को इस्तेमाल करने की यह सब तरीके दुनियावी हैं अल्लाह वाले भी इन्सान की इसी गौर व फिक्र वाली सलाहियत को इस्तेमाल करते हैं लेकीन वह उसे मअरफते इलाही के हासील करने में लगाते है अवलियाऐ कामिलीन अपने मुतवस्सिलीन को ऐसी मुशक्कतें करवाते हैं जिन का मकसद यह होता है के इन्सान की फिक्र अल्लाह के हर गैर से हट कट कर अल्लाह की तरफ लग जाऐ जितना किसी सालिक को इस फिक्र में तरक्की नसीब होती है उस की मअरफत पढती चली जाती है इरतिकाजे तवज्जह की इसी मशक को मुराकबा कह देते हैं :

मुराकबा

मुराकबा के माना हैं मुन्तजिर,इंतजार करनेवाला जैसे इर्शाद फर्माया गया

बेशक अल्लाह तुम पर निगेहबान है

हजरत इमाम गजाली رحمۃاللہ علیہ मुराकबा की हकीकत बयान करते हुए फर्माते हैं के दिल का अल्लाह को ताकते रहना । और इसी तरफ मशगुल रहना । और इसी को मुलाहजा करना और मुतवज्जह होना ।

महासबी رحمۃاللہ علیہ मुराकबे का हाल बयान करते हुऐ कहते हैं इस का शुरु यह है के दिल को कुर्ब परवरदिगार का इल्म हो हज़रतशाह वलियुल्लाह देहलवी رحمۃاللہ علیہ अपनी किताब अल कौलुल जमील म फर्माते हैं

اَلْمُراقِبۃُ اَنْ تُلازِم قَلْبَكَ لِعِلْمِ اَنَّ اللّٰہَ نَاظِرٌ اِلَيْكَ

मुराकबा यह होता है के तो अपने दिल पर इस बात को लाजिम कर ले के अल्लाह तेरी तरफ देख रहा है

मशाइख सालकीन की इस्लाह के लिए उनक हाल के मुताबीक अलग अलग किसम के मुराकबे करवाते है मसलन बाज माशाइख मुराकबा मौत करवाते है , के इन्सान आँखे बन्द कर के तसव्वुर करे के एक दिन में मर जाउंगा तो यह दुनिया और माल व असबाब कुछ भी नहीं होगा में कर्ब में तन्हा हुगा वगैरह वगैरह

बाज मशाइख किसी महबुबे मिजाजी की मुहब्बत सालिक के दिल से निकालने के लिए इस महबुब की सुरत बिगड जाने का मुराकबा करवाते हैं

बाज मशाइख बैतुल्लाह का मुराकबा करवाते है ताके सालिक का दिल जो शैतानी वसाविस व खयालात का घर और हैवानी शहवात व लज्जातसे गंदा हो चुका है वह उन से कट जाऐ और अल्लाह तआ़ला की तरफ धियान जम जाऐ इस के अलावा और भी मुखतलिफ किसम के मुराकबे मशाएख करवाते हैं लेकिन मकसद सब का एक ही है के सालिक की तवज्जोह को अल्लाह तआ़ला के गैर से हटा दिया जाऐ और अल्लाह तआ़ला की तरफ लगा दिया जाए

मुराकबे का तरीका

सिलसिला नकशबंदीया में जो मुराकबा बताया जाता है उस के तहत सालिक जब दुनियावी कामों से फारिग हो जाए तो वह यकसु हो कर यकरू हो कर किब्लारुख हो कर बावज़ू बैठ जाए । आँखों को बन्द करले सर को झुकाले और दिल को तमाम परेशानी खयालात व खतरात से खाली कर के पुरी तवज्जोह और निहायत अदब के साथ अपने खयाल की तवज्जोह और दिल की तवज्जोह अल्लाह की तरफ कर ले । थोडी देर के लिए यह सोच के ना जमीन ना आसमान ना इन्सान ना हैवान ना शैतान कुछ भी नहीं है । बस अल्लाह तआ़ला की रहमत आ रही है । और मेरे दिल में समा रहो है । मेरे दिल की ज़ुलमत व सियाही दुर हो रही है । और मेरा दिल अल्लाह अल्लाह कहे रहा है । शुरु शरु में सालिक का दिल जिक्र की तरफ मुतवज्जह नहीं होता जैसे ही सर झुकाया दुनिया के खयालात व वसाविस दिलमे आने लगे । मिसाल मशहुर है ।كُلُّ اِنَاءٍ يَتَرَشَّحُ بِمَا فِيْهِ **(हर बरतन में से वही निकलता है जो उस में होता है)** दिल में दुनिया भरी होने की कितनी सही दलील है के सर तो झुकाओ यादे इलाही की खातीर मगर परेशान खयालात तंग करने लगें । सालिक को इस बात से घबराने की जरुरत नहीं बल्के यह सोचने की जरुरत है क मुझे तो बहुत मेहनत करनी चाहिए । अगर दिल में यही कुछ ले कर आगे मजिल पर चले गए तो कितनी रुसवाई होगी ।

सालिक मुराकबा में बैठते वक्त जब यह सोचता है । गुमान करता ह के अल्लाह तआ़ला की रहमत आ रही है । तो हदीस पाक

اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِيْ بِيْ **(में बन्दे के साथ उस के गुमान के मुताबिक मामला करता हुँ)** के मुताबिक रहमत दिल में समा जाती है । बिल फर्ज पहले दिन सारा वक्त दुनिया के खयालात आए फकत एक लमहा अल्लाह का खयाल आया तो दुसरे दिन दुनिया के खयालात निस्बतन कम आऐंगे । तीसरे दिन और कम हत्ता के वह वक्त आऐगा के जब सर झुकाऐंगे तो फकत अल्लाह का धियान रहेगा दुनिया कमीनी दिल से निकल जाऐगी ।

दिल के आइने में है तस्वीरे यार

जब जरा गरदन झुकाई देख ली

मुराकबा के दौरान बाज सालिकीन पर उंघ सी तारी हो जाती है । यह إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ (जब तुम्हारे उपर उंघ तारी कर दी गई)के ये फैज ही की अलामत होती है । घबराने की जरुरत नहीं तरक्की होती रहती है । सालिक को मिसाल मुर्गी की मानिन्द है जो अंडों पर बैठ कर उन्हें गर्मी पहुंचाती है । इबतदा में जो अंडे पथ्थर की तरह बेजान मेहसुस होते हैं । इन में जान पडती है । हत्ता के चुं चुं करते चुजे निकल आते हैं । इसी तरह सालिक को इबतदा में अपना दिल पथ्थर की तरह नजर आता है । लेकिन मुराकबा में बैठ कर जिक्र की गरमी पहुचाने से वह वक्त आता है जब दिल अल्लाह अल्लाह करना शुरु कर देता है । जाहिर में यह अमल जितना हलका फलका सादा सा लगता है । उस का असर इतना ही ज्यादा है । चन्द दिन मुराकबा की पाबन्दी कर ने से तो यह हालत हो जाती है के

दिल ढुंढता है फिर वही फुर्सत के रात दिन

बैठे रहें तसव्वुर जानां किए हुऐ

मामुलात नकशबंदीया में मुराकबा का यह मामुल बहुत एहमियत रखता है । क्यों के बाकी तमाम मामुलात तो उमुमी होते हैं लेकिन यह हर सालिक के लिए खसूसी होता है । सालिक की रुहानी तरक्की के साथ साथ इस को भी सबकन सबकन आगे बढाया जाता है । इस तरीका जिक्र के वाजेह दलाइल कुरआ़न व हदीस में मौजूद हैं ।

कुरआ़न मजीद से दलाइल

इर्शाद बारी तआला है :

وَاذْكُر رَّبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ : (अल आराफ)

(और जिक्र करो अपने रब का अपने नफ्स में गिड गिडाते हुए खफिया तरीके से और मुनासिब आवाज में)

मुफस्सिरीन ने فِي نَفْسِكَ का मतलब أي فِي قَلْبِكَ किया है । यानी अपने दिल में अपने रब का जिक्र करो । यहाँ वजकुर अमर का सेगा है गोया

हुक्म दिया ज ारहा है के अपने अल्लाह को दिल में याद करो । चुनान्चे इसी हुक्म की तामील के लिए यह मुराकबा बताया जाता है ।

فِي نَفْسِكَका तजमा अपने दिल में अपने धियान मे अपने सोच में ही किया जा सकता है । अपनी जबान से तो नहीं किया जा सकता । मआरिफुल कुरआन म हज़रत मफ्ती मुहम्मद शफी साहब फर्माते हैं के इस आयत में تَضَرُّعًا وَخِيفَةً से जिक्र कल्बी(दिलसे)और وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ से जिक्र लिसानी (ज़ुबानसे) मुराद है । इस से एक तो जिक्र कल्बी का सुबूत मिला । दुसरा जिक्र कल्बी का जिक्र लिसानी पर मुकद्दम होना साबित हुआ ।

इर्शादे बारी तआला है :

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا : (मुजम्मिल)

(जिक्र कर अपने रब के नाम का)

इस आयत मुबारका में दो बातों का हुक्म दिया गया है ।

अपने रब के नाम का जिक्र करो । यहाँ काबिले गौर नुक्ता है के यह नहीं कहा गया , रब का जिक्र करो । जाहिरन यह भी कह दिया जाता तो काफी था । मगर रब के नाम का जिक्र करो । इस का मतलब यह हुआ के रब तो सिफाती नाम है । यहाँ जाती नाम अल्लाह का जिक्र करने का हुक्म है चुनान्चे लफ्ज अल्लाह का जिक्र करना रब के का जिक्र करना हुआ । पस साबित हुआ के कुरआन मजीद में लफ्ज अल्लाह का जिक्र करने का हुक्म दिया गया है ।

इस (अल्लाह)की तरफ तबत्तुल एखतियार करो "तबत्तल" कहते हैं मेहबुब की खातिर मासिवा से इनकिता,तोड एखतियार करने को । गोया वह चाहते हैं के मखलुक से तोडो और रब से जोडो यह इनकिता अनिल मखलुक बैठे बिठाए तो नसीब होने से रहा । इस लिए कुछ ना कुछ तो करना पडेगा । सवाल पैदा होता है के क्या करें मशाइखोने इस का आसान हल बता दिया क रोजाना कुछ वक्त फारिग कर के यकसु हो कर यकरु हो कर बैठ जाओ । आँखो को बन्द कर लो और बन्द करते वक्त यह सोचो के आज तो में अपनी मर्जी से आँख बन्द कर रहा हुँ ।

एक वक्त आएगा के यह हमेशा के लिए बन्द हो जाऐंगी । इस से दुनिया की बरुखी दिल में बैठेगी । और मखलुक से कट कर खालिके हकीकी से जुडने को तमन्ना पैदा होगो । अगर तबीअत चाहे तो सर पर कपडा डाल लो । और यह सोचो के आज तो अपनी मर्जी से सर पर कपडा डाल रहा हुँ एक वक्त आऐगा के मुझे कफन पहना दिया जाऐगा ।

इस से बरुखीकी कैफियत में इजाफा होगा । रोजाना दस पन्द्रह मिनट आधा घन्टा इस तरह बैठने से सबक फायदेमंद होता जाऐगा । पानी का कतरा देखने मे कितना नर्म होता है । लेकिन किसी पथ्थर पर लगातार गिरता रहे तो उस में सुराख हो जाता है । इसी तरह इन्सान अगर रोजाना इस हालत में बैठ कर अल्लाह अल्लाह का जिक्र करे तो एक वक्त आऐगा के अल्लाह की याद दिल में अपना रास्ता बना लेती है । यह सारी कैफियत मुराकबा कहलाती है । और यही इस आयते करीमा का मक्सुद है । इस मश्क का नाम तबत्तल रख । मुराकबा रख, महास्बा रखे, मगर इस हकीकत से ये अलग नहीं के जिसका कुरआ़न पाक में हुक्म दिया गया है । साबित हुआ के मुराकबा कुरआ़न पाक की तालीमात के ऐन मुताबिक है ।

अहादीस से दलाइल

बुखारी शरीफ में كيف كان بدء الوحى के बाब में मजकूर ह के नबी ﷺ नुजले वही से पहले कई कई दिन का खाना ले कर गारे हिरा में वक्त गजाते थे । इस वक्त ना तो नमाज थी, ना कुरआ़न था, ना रोजा था, फिर वहाँ बैठ कर क्या करते थे ?

मुहद्दिसीन ने लिखा है के जिक्र अल्लाह में अपने वक्त गुजारते थे । मखलुक से हट कट के अल्लाह से लौ लगाने का नाम मुराकबा ही तो है । मुराकबा की तालीम दे कर मशाइख इसी सुन्नत को जिन्दा करते हैं ।

हज़रतअबु हुरैरा رضي الله عنه रिवायत ह के नबी ﷺ ने फर्माया :

ينادى منادى يوم القيامة اين اولوالالباب قالوا اى اولى الالباب تريد قال الذين يذكرون الله قياماً

وقعوداً وعلى جنوبهم ويتفكرون فى خلق السموت والارض ربنا ما خلقت هذا باطلاً سبحانك

فقنا عذاب النار عقد لهم لواء فاتبع القوم لواءهم وقال لهم ادخلوها خالدين

: क़ियामत के दिन एक मुनादी एलान करेगा के अकलमन्द लोग कहाँ हैं । लोग पुछेंगे के अकलमन्दों स कौन मुराद हैं ? जवाब मिलेगा के वह लोग जो अल्लाह का जिक्र करते थे । खडे और बैठे और लेटे हुए । और आसमानों और जमीनों के पैदा होने में गौर करते थे । और कहते थे के या अल्लाह आप ने यह जब बेफायदा तो पैदा नहीं किया । हम आप की ही तस्बीह करते हैं । आप हमें जहन्नम के अजाब से बचा लिजोए । इस के बाद उन लोगों के लिए एक झन्डा बनाया जाएगा जिस के पीछे यह सब जाएंगे । और उन से कहा जाएगा के हमेशा के लिए जन्नत में दाखिल हो जाओ ।

हदीस बाला में गौर व फिक्र करने वालों को जन्नत में दाखले की बशारत दी गई है । इस में अगरचे जमीन व आसमान के पैदा होने के बारे में गौर व फिक्र का जिक्र है । लेकिन हदीस का निचोड यह बता रहा ह के जमीन व आसमान के पैदा होने पर गौर व फिक्र तभी नसीब होगा जब उसे अल्लाह के जिक्र की कसरत के साथ किया जाए । और उस के नतीजे में अल्लाह की मअरफत हासिल हो । और अल्लाह की मुहब्बत में बइखतियार हो कर इन्सान अल्लाह की तस्बीह करने लगे । वरना फकत जमीन व आसमान के बनने में गौर तो आज कल की नयी साइन्सी तहकीकात में भी हो रहा है । और यह तहकीकात करने वाले अकसर खुदा से गाफिल और बेदीन हैं ।

तो गोया हर वह गौर व फिक्र जो अल्लाह की मअरफत,पहेचान की बुनीयाद बने , फजीलतवाली होती है ।

हज़रत अबु हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत ह के नबी ﷺ ने फर्माया : एक आदमी छत पर लेटा हुआ था । और आसमान और सितारों को देख रहा था । फिर कहने लगा खुदा की कसम मुझे यकीन ह के तुम्हारा पैदा करने वाला भी कोई जरुर है ।

ऐ अल्लाह तु मेरी मगफिरत कर दे । नजरे रहमत उसकी तरफ मुतवज्जेह हुई । और उसकी मगफिरत कर दी गई ।

यह गौर व फिक्र भी एक तरीका -ए- जिक्र है । जिस में दिल की गहराई से अल्लाह को याद किया जाता है । हम भी मुराकबा में अपनी सोच को इस तरफ लगाते हैं के अल्लाह की रहमत आ रही है । दिल में समा रही है । और अल्लाह की रहमतें तो हर वक्त बरसती हैं । जब हम अपनो फिक्र को इस तरफ लगाते हैं तो वाकई दिल रोशन हो जाता है ।

इमाम गजाली رحمۃاللہ علیہ ने लिखा है :

गौर व फिक्र को अफजल तरीन इबादत इस लिए कहा गया के इस में माना जिक्र तो मौजूद होता ही हैं । दो चीजों का इजाफा और होता है । एक अल्लाह की मअरफत, पहेचान इस लिए के गौर व फिक्र मअरफत की कुन्जी है । दुसरी अल्लाह की मुहब्बत जो फिक्र से हासील होती है । यही गौर व फिक्र है । जिसे सुफिया मुराकबा कहते हैं ।

(फजाइले आमाल)

हज़रतअबु हुरैरा ﵁ एक हदीसे कुदसी रिवायत करते हैं :

قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْہِ وَسَلَّمَ فِيْمَا يَذْكُرُ عَنْ رَّبِّہٖ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اُذْكُرْنِىْ بَعْدَ الْعَصْرِ وَبَعْدَ

الْفَجْرِ سَاعَةً اَكْفِكَ فِيْمَا بَيْنَهُمَا

(हक तआला ने हुजुर ﷺ को हुक्म फर्माया : के अस्र और फज्र के बाद मेरा जिक्र किया करो । इन दो वक्तों के दर्मियान तुम्हारे कामों की किफायत करुंगा)

इसी लिए मशाइख इकराम सुबह शाम अल्लाह की याद के लिए मुराकबा में बैठने का हुक्म देते हैं ।

मुराकबा के फायदे

अफजल तरीन इबादत

मुराकबा अफ़ज़ल तरीन इबादत है । क्योंके इस में गौर व फिक्र भी शामील होत हैं :

उम्मे दर्दा رضی اللہ تعالیٰ عنہا से किसी ने पुछा क अबु दर्दा ﷺ की अफ़ज़ल तरीन इबादत क्या थी ? फर्माया गौर व फिक्र :

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फर्माते हैं के एक लम्हे का गौर व फिक्र तमाम रात की इबादत से अफ़ज़ल है । हज़रत अबु दर्दा ﷺ और हज़रत अनस ﷺ से भी यही नकल किया गया ।

हजरत अबु हुरैरा ﷺ से रिवायत है के हुज़ूर ﷺ ने इर्शाद फर्माया : के एक लम्हे का गौर व फिक्र साठ बरस की इबादत से अफ़ज़ल है

अफ़ज़ल इबादत होने का यह मतलब नहीं के फिर दुसरी इबादात की जरुरत नहीं ।

बस यही करते रहो । हर इबादत का अपना एक दर्जा है । अगर फराइज वाजिबात और आदाब व सुन्नत को छोड दिया जाए तो इन्सान अजाब व मलामत का उठानेवाला बन जाता है

मुराकबा से ईमान का नूर पैदा होता है

आमिर बिन अब्दे कैस رضي الله عنه कहते हैं के मैं ने सहाबा इकराम से सुना है । एक से दो से नहीं बल्के ज्यादा से सुना ह के ईमान की रोशनी और ईमान का नूर गौर व फिक्र है :

यही वजह ह के मुराकबा की पाबन्दी करने से दिल में एक नूर पैदा होता है । जिस से ईमान की मिठास बढ जाती है । देखते है के जितना मुराकबा की कसरत करते हैं । नमाज की हुज़ूरी, आमाल का शौक, फिक्र आखिरत और अल्लाह की मुहब्बत जैसी कैफियात बढती चली जाती है ।

मुराकबा शैतान के लिए जिल्लत का सबब है

हजरत जुनैद बगदादी رحمۃ اللہ علیہ फर्माते हैं के उन्हों ने एक दफा शैतान को बिलकुल नंगा दखा आप ने पुछा के तुम्हें शर्म नहीं आती के आदमीयों के सामने नंगा होता है । वह कहने लगा के यह भी कोई आदमी हैं । आदमी वह हैं जो शोनिज़्या की मस्जिद में बैठे हैं । जिन्हों ने मेरे बदन को दुबला कर दिया है । और मेरे जिगर के कबाब कर दिऐ हैं । आप फर्माते हैं के में शोनिज़्या की मस्जिद में गया तो में ने देखा के चन्द हजरात घुठनों में सर रखे हुए मुराकबा में मशगुल हैं ।

मुराकबा से रुहानी तरक्की नसीब होती हः

मुराकबा की कसरत से सालिक को रुहानी तरक्की नसीब होती है । सिलसिला आलिया नकशबंदीया में अलग अलग मुराक़बाका एक सिलसिला है जो सालिकीन को दर्जा बदर्जा ते करवाये जाते हैं । हर हर सबक पर सालिक की रुह नफ्स की बुराइयोंसे आजाद होकर बुलंदीकी तरफ सफर करती है । और इसे इस सबक की खास कैफियात नसीब होती है । हत्ता के सालिक को निसबत मअल्लाह की नेमत मइय्यते इलाही का इस्तहजार, नमाज की हकीकत ,उलुलअज़्म अंबिया की फुयुजात और दिगर कमालात में से हिस्सा मिलता है । लेकिन यह तमाम नेमतें मुराकबा की पाबन्दी और कसरत क वजह से नसीब होती हैं ।

मेहनत करने वालों के लिए मैदान खुला है । हिम्मत और इस्तकामत की जरुरत है ।فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ

(पस नेमतों के शाइकीन को चाहिए के वह इस में रगबत करें)

तिलावते कुरआ़न मजीद

एक पारा या आधा पारा रोजाना :

करआ़न मजीद अल्लाह का कलाम है । इन्सानियत के नाम है । हकीकत में यह इन्सानियत के लिए मन्शुरे हयात ,तरीके जिंदगी है । इन्सानियत के लिए दस्तुरे हयात ,कानुने जिंदगी है । इन्सानियत के लिये जाबता हयात है । बल्के पुरी इन्सानियत के लिए आबे हयात है ।

تبارك بالقرآن فَإِنَّهُ كَلامُ اللهِ وَخرج مِنْهُ

कुरआ़न से बरकत हासिल करो के यह अल्लाह का कलाम है । और उस से सादिर हुआ है ।

चुंके हम अल्लाह की मुहब्बत और तआल्लुक चाहते हैं । लिहाजा हमें चाहिए के उस के कलाम से उस के पैगाम से अपना नाता जोडें । और रोजाना मुहब्बत से उस की तिलावत किया करें । मशाइख सिलसिला आलिया नकशबंदीया सालिकीन को रोजाना तिलावत कुरआ़न करीम की हिदायत करते है । एक पारा हो तो बहुत अच्छा वरना कम अज कम आधा पारा तिलावत जरूर करें । उलमा तलबा जिन को तालीमी मसरुफियात ज्यादा हो वह इस से भी कुछ कम कर लें लेकिन रोजाना तिलावत जरूर करें । और अगर कोई पहले से कुरआन पाक पढना नहीं जानता तो उसे चाहिए के किसी कारी साहब से कुरआ़न पढना शुरु करदे । इस में इस के लिए दोहरा अजर है ।

तिलावत करते वक्त बावजू और किबला रुख होकर बैठें और तमाम जाहिरी और बातिनी आदाब का खयाल रखते हुए उस की तिलावत करें । कुरआ़न पाक के जाहिरी और बातिनी आदाब फकोर की किताब "बा अदब बानसीब" से मुलाहजा करें ।

दलाइल अज कुरआन मजीद

दलील नम्बर :- 1

इर्शाद बारी है : فَقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ : (अल मुजम्मिल)

(कुरआन पाक की तिलावत करो जिस कदर तुम से हो सके)

इस आयते करीमा में कुरआन पाक को पढने का हुक्म दिया गया है । इसी की तामील में मशाइख हजरात सालिकीन तरीकत को तिलावते कुरआन पाक क बारेमे बार बार बताते रहते हैं ।

दलील नम्बर :- 2

इर्शाद बारी है : اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ

(जिन लोगों को हम ने किताब अता फर्माइ है । वह इस को एसा पढते हैं के जैसे उस की तिलावत का हक है । यही लोग ईमान रखने वाले हैं)

तो मालुम हुआ के जो अहले ईमान हैं वह कुरआन पाक की तिलावत से गाफिल नहीं होता । और उस का हक अदा करते हैं ।

अहादीस से दलाइल

दलील नम्बर :- 1

तिबरानी ने जामे सगीर में रिवायत नकल की है के नबी ﷺ ने एक सहाबी को नसीहत की ।

اُوْصِيْكَ بِتَقْوَى اللّٰهِ فَاِنَّهٗ رَاْسُ الْاَمْرِ كُلِّهٖ وَعَلَيْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ وَ ذِكْرِ اللّٰهِ فَاِنَّهٗ ذِكْرٌ لَّكَ فِي السَّمَآءِ وَ

نُوْرٌ لَّكَ فِي الْاَرْضِ

(में तुझे खुदा से डरने की वसियत करता हुँ । क्योंके यह तमाम उमुर को जड है । और तिलावत कुरआन और जिकरुल्लाह को लाजिम रख । क्योंके यह आसमान में तेरे जिक्र का सबब हैं । और जमीन में तेरी हिदायत का ।

दलील नम्बर :-2

एक हदीस में हज़रत अबुजर ﵁ से मन्कुल है ।

قَالَ رَسولُ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم عَلَیْكَ بِتِلَاوَۃِ الْقُرآنِ فَاِنَّهٗ نُورٌ لَّكَ فِي الْاَرضِ وَ ذُخْرٌ لَّكَ فِي السَّمآءِ

: (सहोह इब्ने हबान)

फमयिा रसुल ﷺ ने तुम पर तिलावत कुरआ़न जरुरी है । कियोंके यह तेरे लिए जमीन में हिदायत का सबब है । और आसमान में यह तेरा जखीरा है ।

दलील नम्बर :-3

बैहकी ने शेबुल ईमान में हज़रत इब्ने उमर ﵁ से एक रिवायत नकल की है :

قَالَ رَسولُ اللّٰہِ اِنَّ هٰذِهِ الْقُلُوبَ تَصْدَاءُ كَمَا يَصْدَاءُ الْحَدِيْدُ اِذَا اَصَابَهُ الْمَاءُ قِيْلَ يَا رَسولَ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا جِلَاءُهَا قَالَ كَثْرَةُ ذِكْرِ الْمَوتِ وَتِلَاوَةِ الْقُرآنِ

फमयिा नबी ﷺ ने उन दिलों पर जंग लग जाता है । जिस तरह पानी लगने से लोहा जंग आलुद हो जाता है । अर्ज किया गया या रसुलल्लाह ﷺ उन को साफ करने का क्या तरीका है ? आप ﷺ ने फर्माया मौत का जिक्र कसरत से करना और कुरआ़न पाक की तिलावत करना ।

दलील नम्बर :-4

इमाम अब दाऊद رحمۃاللہ علیہ ने यह हदीस नकल की है । عَنْ عَبْدُ اللّٰہِ بِنْ عُمرِ وبْنِ الْعاصِ رَضِيَ اللّٰہُ عَنّهُ قَالَ قَالَ رَسولُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَامَ بِعَشْرِ آيَاتٍ لَّمْ يَكْتُبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ وَمَنْ قَامَ بِمِاَةِ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِيْنَ وَمَنْ قَامَ بِاَلْفِ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْمُقَنْطِرِيْنَ

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अमर ﵁ से रिवायत है के हुजूर ﷺ ने फरमाया : जिस आदमी ने नफलों में खडे होकर दस आयात पढें, ऐसा शख्स गाफिलीन में शुमार नहीं होगा । और जिस शख्स ने सौ आयात पढें ऐसा शख्स इबादत गुजार लोगों में शुमार

होगा । और जिस शख्स ने एक हजार आयात पढें, वह अजर के खजानों को जमा करने वाला होगा ।

दलील नम्बर :- 5

इमाम बुखारी रहः ने यह हदीस नकल की है ।

عن عَبدِاللّٰہِ بن عُمر رِوایۃً طویلۃً و فِیہِ قال علیہِ الصلوۃُ و السلام اِقرءِ القُرآن فی کُلِّ شھر

हजरत अब्दुल्ला इब्ने उमर ﵁ से एक लम्बी रिवायत है । और इस में हुजुर ﷺ ने फरमाया कम अज कम एक माह में कुरआन का खतम करो ।

अहादीस की तामील के लिए हमारे मशाइख रोजाना तिलावत करआन पाक का हुक्म देते हैं ।

तिलावत कुरआन मजीद के फायदे

तिलावत कुरआन पर अजर कसीर

मुतअद्दिद अहादीस में कुरआन पाक की तिलावत पर बेशुमार अज व सवाब की खुशखबरी सुनाई गई ।

हजरत इब्ने मसुद ﵁ हुजुर ﷺ का यह इर्शाद नकल करते हैं के :

من قرأ حرفاً من کتابِ اللّٰہ فلہٗ بہ حسنۃٌ والحسنۃُ بِعشرِ امثالھا لا اقُولُ الم حرفٌ بل الِفٌ حرفٌ ولام حرفٌ و میمٌ حرفٌ (तिर्मिजी) :

जो शख्स एक हरफ किताबुल्लाह का पढे इस के लिए उस हफ के एवज एक नेकी है । और एक नेकी का अज्र दस नेकियों के बराबर मिलता है । में यह नहीं कहता के सारा अलिफ लाम मीम एक हफ है । बल्के अलिफ एक हफ है । लाम एक हरफ मीम एक हफ , मीम एक हर्फ है ।

इस हदीस पाक में कुरआन पाक के हर एक हफ पर दस नेकियों के अज्र का वादा किया गया है । और यह कमतर दरजे का सवाब है । जिसे चाहें उस से कई गुना ज्यादा भी सवाब अता फर्माते हैं ।

हज़रत अली ﵁ से नकल किया गया है ।

जिस शख्स ने नमाज में खडे होकर कलाम पाक पढा । उसको हर हफ पर सौ नकयाँ मिलेंगी और जिस शख्स ने नमाज में बैठकर पढा उस के लिए पचास नेकयाँ और जिस ने बगैर नमाज के वजु के साथ पढा उस के लिए पचीस नेकयाँ और जिस ने बिला वुजू पढा उस के लिए दस नेकयाँ ।

जिस ने हजार आयात की तिलावत की उस के लिए एक किन्तार के बराबर सवाब लिखा जाता है । और एक किन्तार, सौ रितल के बराबर है । और एक रितल, बारह उकिया, के बराबर है । और एक उकिया छेः दिनार के बराबर है । और एक दीनार, चौबीस कोरात के बराबर है । और एक कीरात उहद पहाड के बराबर है ।

इस हदीसे मुबारका के मताबिक अगर हिसाब लगाया जाए तो हजार आयत का सवाब एक लाख बहत्तर हजार आठ सौ उहद पहाडों के बराबर पहुंच जाता है ।

हुज़ुर ﷺ का फर्मान है ।

قرآءةُ اٰيةٍ من كتابِ اللّٰهِ افضلُ من كُلِّ شَیءٍ دُوْنَ الْعرش

(यानी जिस ने कुरआन करीम की एक आयत तिलावत की उस के लिए एक दर्जा बलन्दी होगी । और नूर का चिराग होगा)

अटकने वाले के लिए दोहरा अज

हुज़ुर ﷺ ने इर्शाद फमाया ।

والّذی یقرأ القرآن ویتتعتع فیہ وھو علیہ شاقٌ لہ اجران

(जो शख्स कुरआन को अटकता हुआ पढता है । और उस में दिक्कत उठाता है उस को दोहरा अजर है)

इस में बशारत है उन के लिए जो कुरआन पढे हुए नहीं हैं । अगर वह किसी स पढना शुरु करदें तो उन की इस कोशिश व मेहनत पर दोहरा अज्र मिलेगा ।

काबिले रश्क चोज ------ तिलावते कुरआन

इब्ने उमर رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं के नबी ﷺ ने फमाया :

لا حسد الّا علی اثنین رجلٌ اٰتاہ اللہ القرآن فھو یقوم بہ اٰناء اللیل واٰناء النھار و رجلٌ اٰتاہ اللہ مالاً فھو ینفق منہ اٰناء اللیل واٰناء النھار

हसद दो शख्सों के सिवा किसी पर जाइज नहीं । एक वह जिस को हक तआला शानुहु ने कुरआन शरीफ की तिलावत अता फमाई । और वह दिन रात उस में मशगुल रहता है । दुसरे वह जिस को हक तआला सुबहानहु ने माल की कसरत अता की और वह दिन रात उस को खर्च करता है ।

हसद का माना रश्क के हैं । मक्सद यह है के इन्सान तमन्ना करे के काश के में भी इन जैसा हो जाऊं ।

अबु मुसा رضی اللہ عنہ हुज़ुर ﷺ का यह इर्शाद नकल करते हैं

مثَلُ المؤمنِ الّذي يقرأُ القُرآن كمثَلِ الأُترجة ريحها طيب وطعمها طيب , ومثَلُ المؤمنِ الّذي لا يقرأُ القُرآن ؛ كمثَلِ التمرةِ لا ريح لها وطعمها حلو, ومثَلُ المنافِقِ الّذي يقرأُ القُرآن مثَلُ الريحانةِ ريحها طيب وطعمها مرٌّ , ومثَلُ المنافِقِ الّذي لا يقرأُ القُرآن كمثَلِ الحنظلةِ ليس لها ريحٌ وطعمها مرٌّ

जो मुसलमान कुरआ़न शरीफ पढता है । उस की मिसाल तुरन्ज की सो ह के उनकी खुश्बु उम्दा होती है । और मजा लजीज और जो मोमिन कुरआ़न शरीफ ना पढे उस की मिसाल खुजूर की सी है के खुश्बु कुछ नही मगर मजा शीरीं होता है । और जो मुनाफिक कुरआ़न ना पढे उस की मिसाल हनजल के फल की सी है के मजा कडवा और खुश्ब कुछ भी नही और जो मनाफिक कुरआ़न पढे उस की मिसाल खुश्बुदार फुल की सी है जिस की खुश्बु उमदा होती है और मजा कडवा होता है ।

कुरआ़न पढने वाले की अल्लाह के यहां कद्र

अबु सईद ﵁से रिवायत ह के नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

يقُولُ الرب تبارك وتعالى : من شغله القُرآن عن ذكري و مسئلتي ، أَعطيته أَفضل ما أُعطي السائلين ، وفضلُ كلامِ اللهِ على سائرِ الكلامِ كفضلِ اللهِ على خلقِه. (**तिर्मिजी**) :

अल्लाह तआ़ला यह फर्माति हैं के जिस शख्स को कुरआ़न शरीफ की मशगुलियत की वजह से जिक्र करने और दुआ मांगने की फुरसत नहीं मिलती में उस को सब दुआ मांगने वालों से जियादा अता करता हुँ । और अल्लाह तआ़ला के कलाम को सब कलामों पर ऐसी फजीलत है जैसी खुद अल्लाह तआ़ला को तमाम मखलुक पर ।

शैखुल हदीस हज़रत जकरोया رحمۃاللہ علیہ फर्माति हैं के दुनिया का भी यह दस्तुर है के अगर कोई शख्स मिठाई बांट रहा हो । और एक शख्स उसी बांटने वाले के किसी काम में मशगुल हो तो वह उस शख्स का हिस्सा पहले रख लेता है । तिलावत करने वाले का अल्लाह तआ़ला इसी शख्स की तरह जियादा खयाल फर्माति हैं ।

एक और जगह पर इसी तरह की एक हदीस नकल की गई है । के अल्लाह तआ़ला फर्माते है के जिस शख्स को कुरआ़न पाक की मशगुलियत मुझ से सवाल करने और दुआ मांगने से रोकती है में उस को शुक्र गुजारों के सवाब से बेहतर अता करता हुँ ।

तिलावत खुदा के कुर्ब का बेहतरीन जरीया

यह मज्मुन कई रिवायत में आया है के अल्लाह तआ़ला के हाँ कुर्ब हासिल करने का सब से बेहरीन जरीया कुरआ़न पाक है ।

हज़रत अबुजर ﵁ हुजुर ﷺ से नकल करते हैं के

اِنَّکُمْ لَا تَرجِعُونَ اِلَی اللّٰہِ بِشَیْءٍ اَفْضَلَ مِمَّا خَرَجَ مِنْہُ یعنی القُرآن

तुम लोग अल्लाह की तरफ रुजू और उस के यहाँ तकर्रुब उस चीज से बढ कर किसी और चीज से हासिल नहीं कर सकते जो खद हक तआला सुबहानहु से निकली है , यानी कुरआ़न :

अनस ﵁ ने हुजुर ﷺ का इर्शाद नकल किया है के

اِنَّ اللّٰہَ اَھْلِیْنَ مِنَ النَّاسِ قَالُوا مَنْ ھُمْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ قَالَ اَھْلُ الْقُرْآنِ ھُمْ اَھْلُ اللّٰہِ وَ خَاصَّۃُ

अल्लाह तआ़ला के लिए लोगों में बाज लोग खास घर के लोग हैं । सहाबाने अर्ज क्या के वह कौन हैं । फर्माया के कुरआ़न शरीफ वाले के वह अल्लाह के ऐहल और खास हैं ।

इमाम अहमद बिन हंबल رحمۃاللہ علیہ फर्माते हैं :

मुझे अल्लाह जल्ले शानुहू की ख्वाब में जियारत हुई । और में ने पुछा के या अल्लाह आप का कुर्ब हासिल करने के लिए सब से बेहतरीन चीज कौन सी है । इर्शाद हुआ के :

अहमद मेरा कलाम है में ने अर्ज किया के समझ कर या बगैर समझे इर्शाद हुआ के समझ कर पढे या बगैर समझे दोनों तरह से तकर्रुब का सबब है ।

लिहाजा अल्लाह तआ़ला का तकर्रुब और खुसूसी तअल्लुक हासिल करना हो तो कुरआ़न पाक की तिलावत एक बेहतरीन जरीआ है ।

कुरआ़न पढने वाले के लिए दस इनामात का वादा

एक हदीस मुबारका में हुजुर ﷺ ने इर्शादि फर्माया :

ऐ मुआज अगर तुम्हारा सआदतमन्दों की सी ऐश, शोहदा की सी मौत, यौमे मेहशर में नजात रोजे क़ियामत के खौफ से अमन, अंधेरों के दिन नूर, गर्मी के दिन साया, प्यास के दिन सैराबी, आमाल में हल्कापन की जगह वजनदारी, और गुमराही के दिन हिदायत, का इरादा है तो कुरआ़न पढते रहीए क्योंके यह रहमान का जिक्र पाक है । और शैतान से हिफाजत का जरीया है । और तराजु में रुजहान का सबब है । इस हदीसे मुबारका में कुरआ़न पाक की तिलावत के बदले दस इनआमात को बयान किया गया है । हर एक इनआम इन्सान की निजात के लिए काफी है ।

कुरआ़न पढने वाला अंबिया व सिद्दिकीन के तबक में शुमार होगा

नबी ﷺ ने फर्माया :

من قرأ ألف اٰية في سبيل الله كُتب يوم القيامة مع النبيين و الصديقين والشهداء والصالحين وحسن أولٰئك رفيقاً

जिसने खालिस अल्लाह की रजा के किए हजार आयात तिलावत की वह क़ियामत के दिन अंबिया, सिद्दिकीन, शोहदा, सालिहीन, और हसुना उलाइका रफीका में लिखा जाएगा ।

तिलावते कुरआ़न कुव्वत हाफ्जा बढने का जरीया :

हज़रत अली ﵁ से नकल किया गया है । तीन चीजें हाफीजा बढाती हैं ।

(1) मिस्वाक

(2) रोजा

(3) तिलावत कलामुल्लाह

तिलावत कुरआ़न दिलों के जंग का सैकल है

इर्शादे नबवी ﷺ है के :

اِنّ اللّٰہ اَھْلِیْنَ مِنَ النَّاسِ قَالُوا مَنْ ھُمْ یَا رَسُولَ اللّٰہِ قَالَ اَھْلُ الْقُرآنِ ھُمْ اَھْلُ اللّٰہِ وَ خَاصَّۃٌ

(बेशक दिलों को भी जंग लग जाता है जैसा के लोहे को पानी लगने से जंग लगता है । पुछा गया के हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم इन की सफाई की किया सुरत है । आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फर्माया के मौत को अकसर याद करना और कुरआ़न पाक की तिलावत करना)

कुरआ़न करीम बेहतरीन सिफारशी

हजरत सईद बिन सलीम ﵁ हुजुर ﷺ का इर्शादि नकल करते है :

مَا مِنْ شَفِیْعٍ اَفْضَلُ مَنْزِلَۃٍ عِنْدَ اللّٰہِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مِنَ الْقُرآنِ لَا نَبِیٌ وَلَا مَلَكٌ وَلَا غَیْرُہٗ

(कियामत के दिन अल्लाह के नजदीक कलाम पाक से बढ कर कोई सिफारिश करने वाला ना होगा ना कोई नबी ना कोई फरिश्ता वगैरह)

हजरत जाबिर ﵁ से रिवायत है : हुजुर ﷺ ने फर्माया :

اَلْقُرآنُ شَافِعٌ مُشَفَّعٌ وَمَا حِلٌ مُصَدَّقٌ مَنْ جَعَلَہٗ اَمَامَہٗ قَادَہٗ اِلَی الْجَنَّۃِ وَمَنْ جَعَلَہٗ خَلْفَ ظَھْرِہٖ سَاقَطَہٗ اِلَی

النَّارِ

कुरआन पाक ऐसा शफी है जिस की शफाअत कुबुल की गई है । और ऐसा झगडाल है जिस का झगडा तस्लीम कर लिया गया है । जो शख्स इस को अपने आगे रखे उस को यह जन्नत की तरफ खींचता है । और जो उस को पीठ के पीछे डाल दे उसको जहन्नम में गिरा देता है ।

हदीस मुबारका का मफहुम यह है के कुरआन पाक पढने वालों और अमल करने वालों की शफाअत करता है । और उस की शफाअत कुबुल भी की जाती है । इसी तरह उनके दरजात की बुलंदी लिए इन के हक में झगडता है । और उस का झगडा तस्लीम कर लिया जाता है ।

मुल्ला अली कारी رحمۃاللہ علیہ ने बरिवायत तिर्मिजी झगडे का अहवाल युं बयान किया है ।

कुरआन शरीफ बारगाहे इलाही में अर्ज करेगा के उसको जोडा मरहमत फर्माएं तो अल्लाह तआला उसको करामत का ताज अता करेंगे । फिर कुरआन करीम दरखास्त करेगा के और ज्यादा इनायत हो तो अल्लाह तआला इकराम का पुरा जोडा इनायत फर्माऐंगे । फिर वह दरखास्त करेगे के आप इस से राजी हो जाएं तो हक तआला इस अपनी रजा का इजहार फर्माऐंगे ।

कुरआन पाक अपने पढने वाले की सिफारिश और झगडा कब्र में भी करेगा ।

अल्लामा जलालुद्दिन सियोती رحمۃاللہ علیہ ने अपनी किताब ला ली मस्नुअता में बज्जार की रिवायत से नकल किया है ।

जब आदमी मरता है तो इस के घर के लोग नहेलाने दफनाने में मशगुल हो जाते है । और उस के सिरहाने निहायत हसीन व जमील सुरत में एक शख्स होता है :

जब कफन दिया जाता है तो वह शख्स कफन और सीना के दर्मियान होता है । जब दफन करने के बाद लोग लौटते हैं । और मुन्कीर नकीर आते हैं तो वह उस शख्स को अलग करना चाहते हैं के सवाल अकेले में करें मगर यह कहता है के यह मेरा साथी है । मेरा

दोस्त है । में किसी हाल में भी इस को तनहा नहीं छोड सकता तुम सवालात करना चाहते हो तो अपना काम करो में उस वक्त तक इस से जुदा नहीं होंगा जब तक क इसे जन्नत में दाखिल ना करवा लूं । इस के बाद वह मरने वाले की तरफ मुतवज्जेह होता है । और कहता है में ही वह कुरआन हुँ जिस को तु कभी बलन्द पढता था ,और कभी आहिस्ता । तु बेफिक्र रह मुन्कर नकीर के सवालात के बाद तुझे कोई गम नहीं है । उस के बाद जब वह अपने सवालात से फारिग हो जाते हैं । तो यह मलऐ आला से उस के लिए रेशम के बिस्तर वगैरह का इन्तजाम करता है । जो खुश्बु मुश्क से भरा होता है ।

और उसके खिलाफ , जो कुरआन पाक से लापरवाही बरतते है । उन को जहन्नम में गिरने का सबब भी बनता है । बुखारी शरीफ की एक तवील हदीस है के नबी ﷺ को एक शख्स का हाल दिखाया गया जिस के सर पर जोर से पथ्थर मार कर कुचल दिया जाता था । हुज़ुर ﷺ के दर्याफ्त फर्माने पर मालुम हुआ के इस को अल्लाह ने कुरआन पाक सिखलाया था । मगर उस ने ना शब को तिलावत की और ना दिन में इस पर अमल किया । लिहाजा कियामत तक इस के साथ यही होता रहेगा । तो यह है कुरआन पाक से बेतवज्जही की सजा ।

अल्लाह तआला हमें कुरआन अजीमुश्शान को कदर करने की तौफीक अता फर्माए । और शब व रोज मुहब्बत से इस की तिलावत करने की तौफीक अता फर्माए । आमीन सुम्मा आमीन ।

इस्तग़फार

रोजाना सुबह व शाम सौ सौ मर्तबा ।

اَسْتَغْفِرُاللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْہِ

इस्तग़फार का माना है माफो तलब करना, तौबा करना, आइन्दा के लिए गुनाह छोडनेका पक्का इरादा करना, और गजरे गुनाहों पर शरमिंदा होना, और अगर माफी तलाफी करवा लेना मुनकिन हो तो उस का एहतमाम करना ।

सिलसिला आलिया नकशबंदीया में यह हिदायत की जाती है के रोजाना सुबह शाम सौ सौ मर्तबा इस्तग़फार ।

اَسْتَغْفِرُاللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْہِ

पढा जाऐ । यहाँ फकत तस्बीह पढ देना काफी नहीं । बल्के यह कलिमात कहते हुए दिल में शरमिंदगी हो । और चेहरा गमजदा हो जैसा के हुज़ुर ﷺ ने फर्माया :

فَاِنْ لَّمْ تَبْکُوْا فَتَبَاکُوْا

अगर रोना ना आए तो रोने जैसी शकल ही बनालो ।

शैखुल इस्लाम हज़रत हुसैन अहमद رحمۃ اللہ के हालते जिन्दगी में उन का इस्तग़फार करने का तरीका लिखा ह के तहज्जुद के बाद फज की नमाज से पहले जब इस्तग़फार की तस्बीह करते मुसल्ला पर बैठ जाते तस्बीह हाथ में ले लेते रुमाल निकाल कर आगे रख लेते । इस्तग़फार की तस्बीह करने के दौरान आँखों से आँसओं की लडोयाँ लगातार जारी

रहतीं । और उन को रुमाल से साफ करते जात । कभी कभी दर्मियान में शिद्दते गम से कोइ और जुमला या शेर भी पढ देते । किताबों में लिखा है के कभी वह इस शिद्दत से गिड गिडाते थे के युं लगता था जैसे कोई तालिबे इल्म अपने उस्ताद से बुरी तरह पिट रहा हो । तो यह उन

के इस्तग़फार करने का तरीका था । हमें भी चाहिए के हम अपने अकाबिर की तर्ज पर अपने अल्लाह के हुज़ुर रोते और गिड गिडाते हुए इस्तग़फार करे ताके अल्लाह की रहमत मुतवज्जेह हो जाए । और हमारी गलतियों और कोताहियों का कफ्फारा हो जाऐ ।

सच्ची तौबा की शराइत

मुहद्दिसीन ने सच्ची तौबा की तीन शराइत लिखी हैं :

(1) इस गुनाह को तर्क करदे :

(2) इस गुनाह पर दिल से नदामत और शर्मिन्दगी हो :

(3) आइन्दा से ना करने का पक्का इरादा हो :

चुनान्चे अपने गुनाहों से तौबा करते वक्त इन तीनों शराइत को खयाल मे रखा जाए । सच्ची और पक्की तौबा के बाद फिर अगर इन्सानी कमजोरी के वजहसे गुनाह हो जाए तो दोबारा सच्चे दिल से माफी मांगें । हदीस शरोफ में है के बन्दा तो माफी मांगने से उकता सकता है । अल्लाह मआफ करने से नहीं उकताते ।

हज़रत खाजा अजीजुल हसन मजजुब رحمۃاللہ علیہ इसी बात को अपने अशआर में युं बयान किया है:

ना चित कर सके नफ्स के पेहलवान को
तो युं हाथ पाओं भी ढीले ना डाले
अरे उससे कश्ती तो है उमर भर की
कभी वह दबा ले कभी तु दबा ले
जो नाकाम होता रहे उमर भी
बहरे हाल कोशिश तो आशिक ना छोडे
यह रिश्ता मुहब्बत का कायम ही रखे
जो सौ बार तोडे तो सौ बार जोडे

इस्तग़फार की दो किस्म

इस्तग़फार की दो किस्में हैं । एक आम आदमी का इस्तग़फार और दुसरा अंबिया और खास का इस्तग़फार । आम आदमी का इस्तग़फार अपने गुनाहों और नाफमानीयों पर तौबा और नदामत के इज़हार के लिए होता है । और अंबिया और खास का इस्तग़फार अल्लाह तआला की अज़्मत व किबरयाई के ऐतराफ और अपनी आजिजो के इज़हार के लिए होता है । के ऐ अल्लाह आप की शान इतनी बडी है के हमारी इबादात आप की अज़्मत को नहीं पहुच सकतीं । आप हमें माफ फर्मा दें । चुनान्चे नबी ﷺ का इर्शाद है के मैं दिन और रात में सत्तर मर्तबा इस्तग़फार करता हुँ ।

इस लिए हमें अपने मशाइख रोजाना दो सौ मर्तबा इस्तग़फार की ताकीद फर्माते है । यह नबी ﷺ की सुन्नत भी है । और हमारे गुनाहों की तलाफी भी है । इन्सान खता का पुतला है । गलतियां होती ही रहती हैं । लिहाजा साथ ही साथ अल्लाह तआला से माफी मांगते रहें । हदीस पाक में गुनाहगारों में उस शख्स को बेहतर करार दिया गया जो तौबा करने वाला है ।

كُلُّ بَنِي آدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ الْخَطَّائِينَ التَّوَّابُونَ

यानी हर आदमी खता कार है । लेकिन बेहतरीन खता कार वह है जो तौबा करने वाला है ।

कुरआन मजीद से दलाइल

अल्लाह रब्बुल इज्जत मोमिनों को तौबा व इस्तग़फारका हुक्म देते है । पस तामील लाजिम है :

इरशाद बारी तआला है ।

اِسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا اِلَيْهِ

(तुम अस्तग़फार करो अपने रब के सामने और तौबा करो)

अल्लाह रब्बुल इज्जत इशाद फरमाते हैं :

يٰآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا تُوبُوا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا

(ऐ ईमान वालो हक़ तआ़ला की तरफ पक्की सच्ची तौबा इख़्तियार करो)

दुसरी जगह ईर्शाद फमाया गया :

وَتُوبُوا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

(ऐ ईमान वालो हक़ तआ़ला की तरफ रुजूअ़ करो, ताके तुम कामियाब हो जाओ)

अस्तगफार करने वालों के लिए अल्लाह ने मग़फिरत का वादा कर रखा है ।

इर्शाद बारी तआ़ला है :

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ

(हक़ तआ़ला आप की मौजूदगी में उनको आज़ाब नहीं देंगे । और जब वह अस्तगफार कर रहे होंगे तब भी उनको आज़ाब नहीं होगा)

इस आयत की तफ्सीर में हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फरमाते हैं :

كَانَ فِيْهِمْ اَمَانَانِ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْاِسْتِغْفَارُ فَذَهَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَقِيَ الْاِسْتِغْفَارُ

(उम्मत में आज़ाब से बचने के लिए दो ज़रिये थे । नबी ﷺ और इस्तग़फार नबी ﷺ

तो इस दुनिया से रुख्सत हो गए । अलबत्ता इस्तग़फार अब भी बाकी है ।)

मोमिनों की सिफात बयान करते हुऐ अल्लाह तआ़ला इर्शाद फर्माते हैं

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ

यह हजरात रात को बहुत कम सोते है । और सहर के औकात में मगफिरत तलब करते हैं ।

अहादीस से दलाइल

अल्लाह तआ़ला से तौबा व इस्तग़फार करना सुन्नते नबवी ﷺ है । बुखारी शरीफ की रिवायत है ।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ وَاللّٰهِ إِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً

हजरत अबु हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है । वह कहते ह के मै ने नबी ﷺ से सुना आप ने इर्शाद फर्माया : मैं अल्लाह तआ़ला से मगफिरत तलब करता हुँ । और इसी की तरफ रुजु करता हुँ । यह अमल दिन में सत्तर मर्तबा से भी बढ जाता है ।

तफ्सीर बैजावी पेज 521 पर लिखा है :

وروى عنه إِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ مِائَةَ مَرَّةً

हुज़ुर ﷺ ने इर्शाद फर्माया में दिन और रात में सौ सौ मर्तबा इस्तग़फार करता हुँ ।

मुहद्दिसीन ने लिखा है के नबी ﷺ को रोजाना सत्तर मर्तबा या सौ मर्तबा इस्तग़फार पढना इज़्हार उबुदियत और तालीमे उम्मत के लिए था । हालांके आप ﷺ बख्शे बख्शाऐ थे ।

हजरत अबुबकर सिद्दीक رضي الله عنه से रिवायत है । नबी ﷺ : ने इर्शाद फर्माया :

عَلَيْكُمْ بِلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَالْإِسْتِغْفَارِ فَأَكْثِرُوا مِنْهَا فَإِنَّ إِبْلِيْسَ قَالَ إِنَّمَا أَهْلَكْتُ النَّاسَ بِالذُّنُوبِ

أَهْلَكُوْنِيْ بِلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَالْإِسْتِغْفَارِ

हज़रत अबुबकर सिद्दीक ﵁ हुज़ूर ﷺ से नकल करते है के आप ने फर्माया तुम पर ला इलाह इलल्लाह और इस्तग़फार की कसरत जरूरी है । क्योंके इब्लीस कहता है के मैं ने लोगों को गुनाहों से हलाक किया है । और वह मुझे ला इलाह और इस्तग़फार से हलाक कर रहे हैं ।

अल्लामा इब्ने कसीर رحمۃاللہ علیہ अपनी तफ्सीर में इस्तग़फार के मामलेमे लिखते है ।

عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ مَنْ لَزِمَ الْإِسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللّٰهُ لَهٗ مِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجاً وَّمِنْ كُلِّ ضِيْقٍ

مَخْرَجاً وَّرَزَقَهٗ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

हजरत इब्ने अब्बास ﵁ नबी ﷺ का फर्मान नकल करते हैं के जिस ने कसरतसे इस्तग़फार । हक तआ़ला उस को हर गम और तकलीफ से खुलासी अता फर्माते हैं । और इस को एसे तौर पर रिज्क देते हैं जिस का इस को गुमान भी नहीं होता ।

हजरत फुजाला बिन उबैद ﵁ हुजुर ﷺ से रिवायत करते हुए फर्माते हैं ।

اَلْعَبْدُ آمِنٌ مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مَا اسْتَغْفَرَ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ

बन्दे जब तक इस्तग़फार करता रहेता है अजाबे खुदावन्दी से महफुज रहता है ।

लिहाजा सालिक को चाहिए के रोजाना इस्तग़फार पढना और अपने गुनाहों से तौबा ताइब होना लाजमी समझे । इकमालुश्शियम में लिखा है । ऐ दोस्त तेरा तौबा की उम्मीद पर गुनाह करते रहना और

जिन्दगी की उम्मीद पर तौबा मे ताखीर करते रहना तेरी अकल का चराग गुल होने की दलील है ।

अल्लाह तआ़ला की शान मगफिरत

अल्लाह तआ़ला ने एक तरफ तो तौबा को इन्सान के लिए लाजिम व वाजिब करार दिया । और दुसरी तरफ अपनी रहमत और मगफिरत के दरवाजों को खोल दिया । चुनान्चे अल्लाह रब्बुल इज्जत के मगफिरत के वादों और बशारात को पढते हैं तो बेइख़तियार इस रहीम व करीम आका पर प्यार आने लगता है ।

तिर्मिजी शरीफ की रिवायत है :

إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَالَمْ يُغَرْغِر

हक तआ़ला बन्दा के सकरातुल मौत में मुब्तला होने से पहलेतक इस की तौबा कुबुल फर्मा लेते हैं ।

मुस्लिम शरीफ की रिवायत है :

مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا تَابَ اللهُ عَلَيْهِ :

जो बन्दा मगरिब से सुरज तुलू होने से पहले पहले तौबा कर ले अल्लाह उस की तौबा कुबूल कर लेगा ।

तौबा करने वाले के गुनाहों का दफ्तर बिल्कल साफ कर दिया जाता है । तौबा करने से वह इसी तरह हो जाता है के जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं । हदीस शरीफ में आया है ।

اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ

गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख्स की तरह है जिस ने कभी गुनाह किया ही नहीं ।

और जब अल्लाह तआ़ला की रहमत जोश में आती है तो ना सिर्फ गुनाहों को बख्श देते हैं , बल्को गुनाहों को नेकोयों में तब्दिल कर दिया जाता है ।

فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ

पस यही लोग हैं जिन की बुराइयों को हक तआ़ला नेकियों से बदल देंगे ।

रिवायत हैं के एक आदमी सेहरा में सफर कर रहा था । के एक जगह थक कर सो गया जब जागा तो देखा के उँटनी कहीं चली गई है । बहोत तलाश के बावजुद ना मिली । हत्ता के उसे यकीन हो गया के मुझे इस सेहरा मे शिद्दत भुक व प्यास से मौत आजाएगी ऐन इस मायुसी के आलम में उँटनी आ गई तो वह शख्स कहने लगा ।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَبْدِىْ وَاَنَا رَبُّكَ

या अल्लाह तु मेरा बन्दा में तेरा रब :

यानी इस बन्दे को इतनो खुशी हुई के खुशी के मारे अल्फाज भी उलट कह बैठा ।

हदीस पाक में आया के जितनी खुशी इस मौके पर इस मुसाफिर को हुई । इस से ज्यादा खुशी अल्लाह तआ़ला को इस वक्त होती है जब कोई बन्दा तौबा ताइब होता है ।

बाज मशाइख से मन्कुल है के जब शैतान को मदद बना दिया गया । तो उस ने मोहलत मांगी ।

رَبِّ فَاَنْظِرْنِىْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ

या अल्लाह मुझे क़ियामत तक मोहलत दे दे ।

अल्लाह तआला ने फर्मीया :

فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ

जा तुझे मुअय्यन दिन तक मोहलत दी गई ।

लिहाजा सोचने की बात है के अगर शैतान को मोहलत मिल सकती है तो उम्मते मुहम्मदिया के गुनाहगारों को क्यों नहीं मिल सकती एक रिवायत में आता है के जब शैतान को मोहलत मिल गई तो उस ने कसम खाकर कहा ।

وعزّتك وجلالك لا ازال اُغويهم ما دامت ارواحهم في اجسادهم

ऐ अल्लाह मुझे तेरी इज्जत की कसम । तेरे जलाल की कसम । में तेरे बन्दों को बहकाउंगा जब तक उनकी रुह उनके जिस्म में मौजुद हैं ।

जब शैतान ने बहकाने की कस्में खाई तो रहमते खुदावन्दी जौश में आई लिहाजा फर्माया :

وعزّتي وجلالي لا ازال اغفر لهم ما استغفروني

मुझे अपनी इज्जत और जलाल की कसम । में उनके गुनाहों को माफ कर दुंगा जब वह मुझ से इस्तग़फार करेंगे ।

एक बडे मियाँ कही जा रहे थे । के रास्ते में चन्द नौजवान आपस में बहस करते नजर आऐ । करीब से गुजरन लगे तो एक नौजवान ने कहा बाबा जी हमें एक मसअला बताओ --- एक शख्स ने कोई गुनाह ना किया हो वह अल्लाह के नजदीक अफ़ज़ल है या वह शख्स जो बडा गुनाहगार हो मगर उस ने सच्ची तौबा कर ली हो बुढे मियाँ ने कहा बच्चो में कपडा बुनता हुँ । मेरे लम्बे लम्बे धागे होते है । जब कोई टुटे तो में उसको और बांधता हुँ । लेकिन इस पर नजर रखता हुँ के वह दोबारा ना टुट जाए । मुमकिन है के जिस गुनेहगार ने गुनाहों की वजह से अल्लाह से रिश्ता टुटने के बाद सच्ची तौबा से गांठ बान्धी उस दिल पर अल्लाह की खास नजर रहती हो । के यह बन्दा कहीं फिर ना टूट जाए ।

जब अल्लाह की रहमत इस कदर आम है तो फिर हमें तौबा करने में देर नहीं करनी चाहिए हमें कसरत से इस्तग़फार करते रहना चाहिए । अल्लाह तआ़ला तो फर्माते है ऐ मेरे बन्दे अगरचे तेरे गुनाह आसमान के सितारों के बराबर हैं । अगरचे तेरे गुनाह सारी दुनिया के दरख्तों के पत्तों

के बराबर हैं । या सारे समन्दरों के झाग के बराबर हैं । फिर भी तेरे गुनाह थौडे हैं । मेरी रहमत जियादा है । तु आजा तौबा करले में तेरी तौबा को कबुल कर लुंगा । बलके , यहाँ तक फर्माया के ऐ मेरे बन्दे अगर तुने तौबा की फिर तोड बैठा फिर तौबा की फिर तोड बैठा फिर तौबा की फिर तोड बैठा । ऐ मेरे बन्दे अगर तुने सौ दफा तौबा की और सौ दफा तौड बैठा मेरा दर अब भी खुला है । आजा तौबा कर ले में तेरी तौबा को कुबुल कर लुंगा ।

सच कहा गया ।

اُمَّۃٌ مذْنِبَۃٌ وَ رَبٌّ غَفُور

उम्मत गुनेहगार व रब आमुर्जगार (शरमिंदा)अस्त ।

इस्तग़फार के फायदे

इस्तग़फार के फायदे इस तरह ह :

अल्ला तआ़ला के महबुब

अल्लाह तआला कुरआ़न में इर्शाद फर्माते हैं :

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ

बशक अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों से मुहब्बत रखता है ।

तो मालुम हुआ के कसरत से तौबा व इस्तग़फार करने वाला अल्लाह तआ़ला का महबूब बन्दा बन जाता है । लिहाजा हमें चाहिए के हम इस्तग़फार करते रहा करें । ताके अल्लाह के महबुब बन्दे बन जाएं ।

अब इस्तग़फार के कुछ फायदे हुज़ुर ﷺ की ज़ुबान मुबारक से भी सुनिये आप ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

من لَزِمَ الْاِسْتِغْفَارَ جعلَ اللّٰهُ لَهُ مِنْ كُلِّ ضِيْقٍ مَخْرَجاً ومن كُلِّ هَمٍّ فَرَجاً ويرزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِب

इस हदीस पाक में इस्तग़फ़ार के तीन अजीब व गरीब फायदें का जिक्र किया गया ।

हर तंगी से निजात

फर्माया :

من لزم الاستغفار جعل الله له من كل ضيق مخرجاً

जो इस्तग़फार को लाजिम कर लेता है । अल्लाह तआ़ला हर तंगी से उसे निजात अता फर्माते हैं ।

यानी हर तंगी और मुशकिल के वक्त कसरत से इस्तग़फार करना इन्सान को निजात का रास्ता दिखा देता है । फिर उस की मुशकिलें दूर हो जाती हैं ।

हर गम से निजात

ومن كل هم فرجاً

और हर गम से इन्सान को निजात देता है :

गम के लिए दो लफ्ज इस्तेमाल होते हैं । एक हुज़्न और एक हम्म हुज़्न तो कोई भी गम हो सकता है । लेकिन यहाँ हम्म का लफ्ज इस्तेमाल हुआ है । हम्म उस शदीद गम को कहते हें जो जान को घुला दे । तो फर्मीया के इस्तग़फार शदीद किस्म के गमों से भी इन्सान को निकाल देता है ।

रिज्क में फरावानी (बरकत)

ويرزقه من حيث لا يحتسب

फिर फर्मीया इस को ऐसी जगह से रिज्क मिलेगा जहाँ से इसे गुमान भी नहीं होगा । तो मालुम हुआ के इस्तग़फार करने से इन्सान के रिज्क में बरकत होती है । उस का रिज्क बढा दिया जाता

है ।

आज लोग आकर शिकायत करते हैं । हज़रत बडी तंगी में हुँ । बडी परेशानी में हुँ । यह काम नहीं हो रहा है । वह काम नहीं हो रहा कारोबार ठप हो गया है । लगता है किसी ने कुछ कर दिया है । इन सब हजरात के लिए एक ही इलाज और एक ही नुस्खा है के इस्तग़फार की पाबन्दी करें । इस्तग़फार की कसरत करें । अल्लाह तआ़ला हर परेशानी से निकाल देते हैं ।

दरुद शरीफ

रोजाना सुबह और शाम सौ सौ मर्तबा :

اللّٰهم صلّ على سيدنا محمدٍ و على آلِ سيدنا محمدٍ وبارك وسلّم

नबी ﷺ के उम्मत पे इस कदर एहसानात हैं । के ना तो उन का हक अदा हो सकता है ना ही शुमार होसकता है । लिहाजा सालिक जितनी बाकाइदगी और मुहब्बत व इख्लास से दरुद शरीफ पढे वह कम है चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने अपने लुतफ व करम से इस पर सैंकडों अर्ज व सवाब अता फर्मा दिए

नबी ﷺ पर दरुद भेजना औलिया कराम का सुबह व शाम का मामूल रहा है । यही वजह है के सिलसिला आलिया नकशबंदीया में सालिक को सुबह शाम सौ सौ मर्तबा दरुद शरीफ पढने की ताकीद की जाती है । दरुद शरीफ यह है ।

اللّٰهم صلّ على سيدنا محمدٍ و على آلِ سيدنا محمدٍ وبارك وسلّم

यह दरुद शरीफ मुखतसर और जामे है । सालिक इनतिहाई मुहब्बत और शौक से दरुद शरीफ पढ । और पढते वक्त यह तसव्वुर करे के दरुद शरीफ का यह एक तोहफा है जो वह हुज़ूर ﷺ की खिदमत में भेज रहा है :

दलाइल अज कुरआ़न मजीद

इर्शाद बारी है ।

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

बशक अल्लाह तआ़ला और उस के फरिश्ते रहमत भेजते हैं , उन पैगम्बर पर । ऐ ईमान वालो तुम भी आप पर दरुद शरीफ भेजा करो और सलाम भजा करो

इस आयते शरीफा को " इन्ना " के लफ्ज से शुरु फमाया गया जो निहायत ताकीद की दलील है । अल्लाह और उस के फरिश्ते हमेशा दरुद शरीफ भेजते रहते हैं । नबी ﷺ पर इस से इज्जत अफजाई क्या होगी के अल्लाह तआला ने दरुद शरीफ भेजने की निस्बत पहले अपनी तरफ की, फिर फरिश्तों की तरफ की, फिर मोमिनों को हुक्म दिया, के तुम भी दरुद शरीफ भेजो एहसान का बदला चुकाना अच्छे अख्लाक में से है । और नबी ﷺ हमारे मोहसिने आजम है : पस अल्लाह तआला ने हमें एहसान का बदला चुकानका तरीका बता दिया । नबी ﷺ की शाने मेहबुबियत का अजब आलम के अल्लाह ने कलमा शहादत में आप ﷺ के नाम को अपने नाम के साथ जिक्र फमाया । आप ﷺ की इताअत को अपनी इताअत के साथ । आप की मुहब्बत को अपनी मुहब्बत के साथ और आप पर दरुद शरीफ को अपने इताअत के साथ शरीक फमाया हज़रत शाह अबदुल कादिर رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं ।

अल्लाह से रहमत अपने पैगम्बर पर और उन के साथ उन के घराना पर मांगना ये बडी कुबूलितय रखती है । उन पर उन की शान के लायक रहमत उतरती है । और मांगने वाले पर एक दफा मांगने से दस रहमतें उतरती हैं । अब जिस का जितना भी जी चाहे इतना हासिल करे ।

दलाइल अज अहादीस

नबी ﷺ का फर्मान है :

عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من صلى على صلوة واحدة صلى الله عليه عشرا

जो शख्स मुझ पर एक दफा दरुद शरीफ पढे । अल्लाह इस पर दस दफा दरुद शरीफ भेजता है ।

तिबरानी की रिवायत से यह हदीस नकल की गई है की जो मुझ पर एक दफा दरुद शरीफ भेजता है । अल्लाह तआला उस पर दस दरुद शरीफ भेजता है । और जो मुझ पर दस दफा दरुद शरीफ भेजता है

अल्लाह उस पर सौ दफा दरुद भेजता है । और जो बन्दा मुझ पर सौ दफा दरुद भेजता है । अल्लाह तआला उस पर براة من النفاق وبراة من النارا लिख देते हैं ।

अल्लामा सखावी रहः न हुजुर ﷺ का इर्शाद नकल किया ह के तीन आदमी क़ियामत के दिन अर्श के साए में होंगे । एक जो मुसीबतजदा की मुसोबत हटाए । दुसर जो मेरी सुन्नत को जिन्दा करे, तीसरे जो मेरे उपर दरुद शरीफ भेजे ।

हुजुर ﷺ का पाक इर्शाद है :

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلٰوةً :

क़ियामत में लोगों में सब से ज्यादा मुझ से करीब वह शख्स होगा जो सब से ज्यादा मुझ पर दरुद शरीफ भेजेगा :

एक हदीस मुबारका में इर्शाद फर्माया गया ।

मुझ पर दरुद शरीफ भेजना क़ियामत के दिन पुलसिरात के अन्धेरे में नुर है । और जो यह चाहे के उस के आमाल बहुत बडी तराज़ू में तुले उस को चाहिए के मुझ पर कसरत से दरुद शरीफ भेजा करे ।

जादुस्सईद में लिखा है के क़ियामत में किसी मोमिन की नेकोयां कम हो जाएंगी तो रसुल ﷺ एक परचा सरे अंगुश्त के बराबर मिजान में रख देंगे । जिस से नेकयों का पलडा भारी हो

जाएगा । वह कहेगा माँ बाप आप पर कुर्बान हो आप कौन हैं ? आप की सुरत व सीरत कैसी अच्छी है । आप ﷺ फर्माएंगे में तेरा नबी हुँ । और यह दरुद शरीफ है जो तु ने मुझ पर पढा था । तेरी हाजत के वक्त में ने इसको अदा कर दिया ।

इर्शाद फर्माया :

مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْراً وَحِيْنَ يُمْسِي عَشْراً اَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ :

जो मुझ पर सुबह शाम दरुद शरीफ दस दस मर्तबा पढे उस को क़ियामत के दिन मेरी शफाअत पहुंच कर रहेगी ।

इमाम मुसतगफिरी رحمۃاللہ علیہ ने नबी ﷺ का इर्शाद नकल किया है के जो कोई हर रोज मुझ पर सौ दफा दरुद शरीफ भजे उस की सौ हाजतें पुरी की जाएगी । तीस दुनिया की बाकी आखिरत की ।

मशाइख नकशबन्द इसी लिए सालिकीने तरीकत को सुबह शाम सौ सौ मर्तबा दरुद शरीफ पढने की तलकीन फर्माते हैं ।

दरुद शरीफ के फायदे

कुतुबे हदीस और मशाइख से कसरते दरुद शरीफ के बशुमार फवाइद मौजुद हैं । जिन को   बयान करन के लिए मुसतकिल एक किताब चाहिए । यहाँ कछ फवाइद के साथ दर्ज किए जाते हैं ।

गुनाहों का कफ्फारा होना -

दरजात का बलन्द होना -

आमाल का बडी तराज़ू में तुलना -

सवाब का गुलामों के आजाद करने से ज्यादा होना -

खतरात से निजात पाना -

नबी ﷺ की शफाअत नसीब होना -

आपका गवाह बनना -

अर्श का साया मिलना -

हौजे कौसर पर हाजिरी नसीब होना -

क़ियामत के दिन की प्यास से बचना -

पुलसिरात पर सहुलत से गुजरना -

जहन्नम से खुलासी होना -

मरने से पहले मुकर्रब ठीकाना देख लेना -

सवाब का बीस जिहादों से ज्यादा होना -

नादार के लिए सदका का कायम मकान होना -

माल में बरकत होना -

पढने वाले के बेटे और पोतेका मुन्तफा होना -

दुशमनों पर गलबा पाना -

निफाक से बरी होना -

दिल का जंग दुर होना -

लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा होना -

जो शख्स सारी दुआओं को दरुद शरीफ बनाए । उस के दुनिया व आखिरत के सारे कामों की अल्लाह की मदद होना । ख्वाब में नबी ﷺ की जियारत नसीब होना ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

राब्ता -ए-शैख

दीन सीखने के लिए शैख से राब्ता रखना ।

तमाम मामलात का असल उसुल राब्ता -ए-शैख है । अगरच के मामुलात में यह छठ नम्बर पर दज किया गया है । लेकिन इस की पाबन्दी से ना सिर्फ तमाम मामुलात की पाबन्दी नसीब हो जाती है । बल्के उनकी हकीकत गर्ज व गायत और नतीजा भी उसी से ही सामने आता है । राब्ता -ए-शैख से मुराद है दीन सीखने के लिए राब्ता रखना शैख से । राब्ता जाहिरी और बातिनी दोनों लिहाज से होना चाहिऐ ।

जाहीरी राब्ता

जाहिरी राब्ता तो यह है जसे हाजिरे खिदमत होना या खत व किताबत या टेली फौन वगैरह के जरीए अपने हालात से शैख को बाखबर रखना । और उन की हिदायत के मुताबिक अपनी जिन्दगी बसर करना । सालिक जिस कदर जाहिरी राब्ता बढायेगा उसी कदर शैख से तअल्लुक मजबुत से मजबुत तर होगा । और उस की मुहब्बत बढकर बातिनी राब्ता की राह आसान होगी । अलबत्ता शैख की खिदमत में आने जाने और रहने में इस बात का ख्याल रखे के किसी एसे वक्त में हाजिरी की कोशिश ना करे के जब शैख के दिल में कुछ रुखापन पैदा होनका अंदेशा हो , या उनका कोई मामुलमे खलल होता हो । बेहतर यह है के जब आना हो या कहीं सफर में साथ चलना हो तो शैख से पहले इजाजत ले ले । सालीक शैख की खिदमत में आदाबे शैख का पुरा पुरा खयाल रखेगा तो इन्शाअल्लाह बातिनी नेमत से माला माल होगा । शैख के आदाब फकीर की कुतूबे " शजरा तय्यबा " और " बाअदब बा नसीब " से देखे जा सकते है ।

बातिनी राब्ता

बातिनी राब्ता से मुराद यह है के सालिक जहाँ कहीं भी हो शैख के रुबरु हो । या दुर हो उस के बातिन में शैख की मुहब्बत ऐसी रच बस चकी हो के शैख की मन्शा का खयाल उस के दिल पर जम चुका हो । और उस के तमाम आमाल उस के मुताबिक होजाएं । जब

सालिक की यह हालत हो जाती है तो उस को शैख से फैज हर वक्त लगातार से मिलना शुरु हो जाता है । उस शख्स के लिए जिस्मानी फासले फिर फैज के हासील होनेमे में रुकावट नहीं बनते । वह दुर बैठा भी शैख से वह फाइदा हासिल कर रहा होता है । जो शैख के पास गफ्लत से रहने वाले हासिल नही कर पाते क्यों के उस का दिल शैख के दिल से नही जुडा हुआ होता है । शैख की रुहानी और ईमानी कैफियात क्योंके दर्जा कमाल को पहची हुई होती है । लिहाजा बातिनी राबता रखनेवाला उनसे फासले पर रहेकर भी उससे फायदामंद होता रहता है । और उनके कमालात से जियादा हिस्सा पाता है ।

राब्ता -ए-शैख सालिक के लिए चुंके बहुत ही फायदेमंद है । लिहाजा बाज औकात मशाइख सालिकीन को बतौरे इलाज तकल्लुफन तसव्वुरे शैख का शुगल बताते है । ताके वसावीस दुर हो जाए और शैख की मुहब्बत हावी हो जाए लेकिन चुंके यह कम फेहमी और कम इल्मी का दौर है । और लोगों का अकाइद के फसाद में मुबतला हो जाने का अंदेशा है । इस लिए तसव्वुरे शैख की हिदायत तो नहीं की जाती । ताहम यह तालीम दी जाती है के मुराकबा में यह तसव्वुर करें के मेरा कल्ब शैख के कल्ब से मिला हुआ है । और शैख के कल्ब से फज मेरे कल्ब में आ रहा है इसे राब्ता कल्बी कहते हैं । और जब भी शैख की खिदमत में जाए तो राब्ता कल्बी के साथ रहे । यह हुसूले फैज के लिए बहुत ही फायदेमंद है ।

यह बात पेशे नजर रहे के शैख से जाहिरी राब्ता ही सबब है, बातिनी राब्ता का । कियोंके जब कसरत से शैख के खिदमत म आना जाना रखेंगे तो शैख से कल्बी मुनासिबत पैदा होगी । और उनके कमालात को पहेचान होगी जिस से शैख की मुहब्बत में लज्जत हासिल हो जाएगी । और यही मुहब्बत ही राब्ता -ए-शैख का तमाम तर असल उसुल है जिस कदर इस में इजाफा होगा उसी कदर राब्ता शैख की हकीकत नसीब होगी ।

कुरआ़न मजीद से दलाइल

दलील नम्बर :- 1

इर्शाद बारी तआला है ।

وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ :

उन लोगों के रास्ते पर चलो जो मेरी तरफ रुजू कर चके हों

पीर व मुशिद में चुंके इनाबत इलल्लाह कुटकुट कर भरी हुई

होती है । लिहाजा उन की पैरवी करना ।

आयते बाला के मुताबिक हुक्मे इलाही की तामील है । इत्तबा के लिए इत्तला जरुरी होती है । और इसी को राब्ता -ए-शैख कहते हैं ।

दलील नम्बर :- 2

इर्शाद बारी है ।

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ :

ए ईमान वालो अल्लाह से डरो । और उस का कर्ब ढडो । और अल्लाह की राह में जिहाद किया करो । उम्मीद है तुम कामोयाब हो जाओगे ।

मुहक्किकीन तफ्सीर का फमान है وَابْتَغُوْا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ में मुशिद पकडने की तरफ इशारा है जो अल्लाह के कुर्ब और इन्सान की इस्लाह का सबब बनता है । जब के وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ में नफ्स के खिलाफ मुजाहदे यानी तसव्वुफ की तरफ इशारा है ।

हदीस पाक में है ।

اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهٗ فِيْ طَاعَةِ اللّٰهِ

मुजाहिद वह है जो अपने नफ्स के साथ अल्लाह की इताअत में जिहाद करे :

दलील नम्बर :- 3

يآايُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا اتَّقُوااللّٰهَ وكُونُوا مع الصَّادِقِين :

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो । और सच्चों के साथ रहो ।

हजरत मुफती मुहम्मद शफी رحمۃاللہ علیہ फर्माते हैं । इस जगह कुरआन करीम ने उलमा व सुलहा की बजाए सादिकीन का लफ्ज एखतियार फर्माकर आलिम व सालेह की पहचान बतलादी के सालेह सिर्फ वही शख्स हो सकता है जिस का जाहिर व बातिन एक जैसा हो । नियत व इरादे का भी सच्चा हो । कौल का भी सच्चा हो । अमल का भी सच्चा हो । साफ जाहिर है के आज के दौर में सादिकीन का मतलब मशाइख ही हैं ।

दलील नम्बर :- 4

इमाम राजी رحمۃاللہ علیہ अपनी तफ्सीर कबीर में **अनअमता अलैहिम** की तफ्सीर करते हुए लिखत हैं । अल्लाह तआला ने सिर्फ

اِهْدِنَا الصِّراطَ الْمُستَقِيْمَ: के अल्फाज पर किफायत नहीं की बल्के صراط الَّذِيْنَ اَنْعمت عليهم भी साथ फर्माया । यह इस बात पर दलालत करता है के मुरीद के मकामाते हिदायत तक पहुंचने की सिवाए उसके कोई सुरत नहीं के वह ऐसे शैख व रेहनुमा की इत्तबा करे जो इसे सीधे रास्ते पर चलाए । और गुमराहीयों और गलतीयों के मवाके से बचाए । और यह इस बिना पर जरुरी है के अकसर मख्लुक पर नफ्स और कोताही गालिब है । तो फिर ऐसे कामिल की इत्तबा जरुरी है जो कमतर की रेहनुमाई करे, ताके कमतर आदमी की अकल कामिल के नुर से कुव्वत पकडे । ऐसा ही करने से कमतर इन्सान सआदत और कमालात को हासील कर सकता है ।

लिहाजा मरशिद मुरब्बी की जरुरत क लिए यह दलील इतमामे हज्जत का दर्जा रखती है :

दलील नम्बर :- 5

इर्शाद बारी है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ

अल्लामा सय्यद अमीर अली मलीह आबादी इस आयत के तहत लिखते हैं :

" इस आयत में दलालत है ,के गुनेहगार बंदा अगर किसी सालेह व परहेजगार बंदेसे दुआ करवाए तो काबिले कबुलियत होती है । और जो लोग इस जमाने में पीरों के मुरीद होते हैं वह भी यही तौबा है "

आयात बाला से यह साबित हुआ के आज के दौर में भी जो बन्दा गुनेहगार किसी शैख कामिल मुत्तबे शरीअत व सुन्नत को तलाश करेगा । वह وَابْتَغُوْا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ पर अमल करेगा । अगर इस शैखे कामिल के हाथ पर बैत तौबा करेगा । اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ पर अमल करेगा । अगर शैखे कामिल की सोहबत में बैठेगा तो काكُوْنُوْا مَعَ الصَّادِقِيْنَ सवाब पाएगा ।अगर शैखे कामिल के नसोहतोंपर अमल करेगा तो وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّपर अमल करने वालों में शुमार होगा । यही रास्ता صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ का मानींद है । जिस पर चलने की हर छोटा बडा सुबह व शाम दुआएं करता है :

अहादीस से दलाइल

फितरते इन्सानी ह के वह सोहबत से जितना असर लेती है । गैर मौजुदगो से इतना असर नहीं लेती । गो के हजराते सहाबा कराम के सामने कुरआन की आयात नाजिल होती थी । मगर उस के बावजुद उन पर खशीयत व हुजूरी की जो कैफियत नबी ﷺ की खिदमत में होती थी । वह गैब में नही होती थी । चन्द मिसालें पेश की जाती हैं ।

दलील नम्बर : 1

हजरत अनस ؓ फर्माते हैं :

जिस रोज रसुल ﷺ मदीना मनव्वरा तशरीफ लाए थे । मदीना की हर चीज मनव्वर हो गई थी । और जिस दिन आप सल : का विसाल हुआ तो मदीना की हर चीज पर जैसे अंधेरा छा गया । और हम आप ﷺ को दफन के बाद हाथ से मिट्टी भी ना झाड पाते थे के हम ने अपने कुलूब में अंधेरा पाया था ।

पस सहाबा कराम ؓ जैसी मुकद्दस हस्तोयों ने भी तसलीम किया के उन की जो कैफियत नबी ﷺ

की सोहबत में होती थी वह बगैर सोहबत के नहीं होती थी । जिस तरह सहाबा ؓ मिशकाते नुबुव्वत से फैज पाया करते थे । आज भी मुरीद अपने मशाइख की सोहबत में रह कर उन से फैज पाया करते हैं ।

दलील नम्बर : 2

मुस्लीम शरीफ की रिवायत है के एक मर्तबा हज़रत हनजला ؓ घर से यह कहते हुए निकले । نافق حنظلة यानी हनजला मुनाफिक हो गया । रास्ते में हज़रत अबु बकर ؓ से मुलाकात हुई , वह यह सुन कर फर्माने लगे के सुबहानल्लाह ,क्या कह रहे हो ? हरगिज नहीं । हज़रत हनजला ؓ ने सुरतेहाल बयान की के जब हम लोग हुज़ूर ﷺ की खिदमत में होते हैं । और हुज़ूर ﷺ व सल्लम दोजख और जन्नत का जिक्र फर्माते हैं तो हम लोग ऐसे हो जाते ह जैसे वह दोनों हमारे सामने हैं । जब हुज़ुर ﷺ के पास से घर वापस हो जाते है तो बीवी बच्चों और जायदाद वगेरह के धन्दों में फंस कर उस को भुल जाते हैं हज़रत अबु बकर सिद्दीक ؓ न फर्माया यह कैफियत तो हमें भी पेश आती है । पस दोनों हजरात ने नबी ﷺ की खिदमत में हाजिर हो कर सुरते हाल बयान की, तो नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया : उस जात की कसम जिस के कब्जे में

मेरी जान है अगर तुम्हारा हर वक्त वही हाल रहे जैसा मेरे सामने होता है तो फरिश्ते तुम से बिस्तरों और रास्तों मे मुसाफहा करने लगें । लेकिन बात यह है के हनजला " गाहे गाहे " यानी गाहे हुजूरी की कैफियत बुलंदीपर होती है । और गाहे इस में कमी आ जाती है ताके मआशी व मआशरती निजाम दुरुस्त रहे । फैजाने सोहबत को इससे ज्यादा वाजेह मिसाल और क्या हो सकती है ?

दलील नम्बत : 3

हदीस पाक में वारिद है के एक सहाबी ﷺ को नजर लग गई तो नबी ﷺ ने फमाया اَلْعينُ حقٌ

यानी नजर असर करती है ।

अब सोचने की बात है के जिस नजर में अदावत हो, हसद हो, बुगज हो, कीना हो, वह नजर अपना असर दिखा सकतो है तो जिस नजर में मुहब्बत हो, शफ्कत हो, रहमत हो, इखलास हो, वह नजर क्यों असर नहीं दिखा सकती ? यह अल्लाह वालों को नजर ही तो होती है जो गुनाहों में लिथडे हुए इन्सान में एहसास शरमिंदगी पैदा करती है । और रब के दरबार में रब का सवाली बना खडा कर देती है :

निगाहे वली में वह तासीर देखी

बदलती हजारों की तक्दीर देखी

दलील : 4

हजरत अबु हुरैरा ﷺ से रिवायत है नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया :

اَلرَّجلُ علٰى دِينِ خَلِيْلِه فَلْيَنْظُر اَحَدُكُم مَنْ يُّخَالِل

हर शख्स अपने दोस्त के तरीके पर होता है । पस इस को देख लेना चाहिए के वह किस शख्स से दोस्ती कर रहा है ।

हदोसे बाला के मुताबिक इन्सान अपने खलील के दीन पर होता है । पस सालिक को चाहिए के वह शैख की मुहब्बत को लाजिम पकडे उन को अपना खलील और अपना रहेबर व रहनुमा जाने । ताके इन की

मानिन्द दीन के रंग में रंग जाना आसान हो । तिमिजी शरीफ की रिवायत है के नबी ﷺ ने फमयिा

لَا تُصَاحِبْ اِلَّا مُؤْمِنًا ईमानदार के अलावा किसी को दोस्त मत बनाओ । यही सोहबत शैख और राब्ता -ए-शैख है ।

दलील :5

हदीस पाक मे है ।

اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ ।

हर शख्स का हशर व नशर अपने मेहबुब के साथ होगा ।

यह हदीस मुबारका सालिकीन तरीकत की तसल्ली के लिए काफी है । सालिक अगर अपने शैख से राब्ता मजबत से मजबुत बनाएगा तो अपने दिल में शैख की मुहब्बत भी शदीद पाएगा । यही अलामत है क़ियामत के दिन اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ का मज्दा -ऐ- जांफिजा सुनने की ।

हज़रत अनस ؓ से रिवायत है के اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ तु उस के साथ होगा जिस के साथ तु ने मुहब्बत की ।

अब इस बात को अगर मजीद गेहराई में सोचें तो आज जो सालिक अपने किसी शैख-ए-कामिल के साथ मुहब्बत करता है तो अन्जाम कार के तौर पर इसे अपने शैख से मिला दिया जाऐगा । इसी तरह इस शैख को अपने शैख से और होते होते यह सिलसिला हुजुर सल ल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचेगा गोया इस पूरी की पूरो चेन की इस लडी को आखिरत में नबो ﷺ क साथ इकठ्ठा कर दिया जाएगा कियोंके इस लिए के اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ।

दलील नम्बर : 6

हदीस पाक में है :

عليكم بمجالسة العلماء واستماع كلام الحكماء فان الله تعالى يحيى القلب الميت بنور الحكمة كما تحيي الارض الميت بماء المطر:

तुम्हारे उपर उलमा की हम नशीनी और दाना लोगों की बातें सुनना लाजिम है । क्योंके अल्लाह तआ़ला हिकमत के नुर के साथ मर्दा दिलों को जिन्दा फर्माते है ।

जिस तरह बन्जर जमीन को बारिश के पानी से जिन्दा करते हैं ।

सोहबत शैख में वक्त गुजारना इसी फर्माने नबवी ﷺ अमल की पैरवी करना है ।

दलील नम्बर : 7

हजरत अबु सईद رضي الله عنه से एक हदीस पाक में बनी इसराइल के एक कातिल का किस्सा मन्कूल है । जिस ने सौ को कतल किया फिर नादीम व शर्मिन्दा हुआ तो किसी ने उसे सलहा की बस्ती में जाने के लिए य कहा ।

انطلق الى ارض كذا وكذا فان بها اناسا يعبدون الله تعالى فاعبد الله معهم :

फलां फलां इलाका में चले जाओ । उन में अल्लाह तआ़ला की इबादत करने वाले लोग होंगे तुम भी उनके साथ इबादत में लग जाओ ।

सालिक जब अपने शैख की खानकाह में हाजिर होता है तो वहाँ मुरीदीन का मजमा मिस्दाक उनासैय्याबुदूनल्लाहा तआ़ला क मानींद मौजुद होता है । लिहाजा इसे फाबुदिल्लाहा मआहुम पर अमल करने की सआदत नसीब होती है ।

राब्ता -ए-शैख के फायदे

इस्लाहे नफ्स

राब्ता -ए-शैख का सब से बडा फायदा तो यह है के इन्सान की इस्लाह आसान हो जाती है । आदमी जब शैख की नजर में रहता है तो वह इसके हाल के मुताबिक रोक टोक करते हैं । और इस को ऐसे इबादत में मशगुल करते हैं जिन से उस के अन्दर का जोहर निखर कर सामने आ जाता है । बिलकुल ऐसे ही है जैसे हीरा जौहरी के हाथ में आता है तो उस की तराश खराश से उस के अन्दर निखार आ जाता

है ।

दर असल इन्सान का नफ्स बहुत मक्कार है । वह अपनो गलतीयोंको भी अच्छाइयां बना कर पैश करता है लेकिन जब इन्सान किसी शैख कामिल की नजर में आता है तो फिर उस की हकीकत को समझ कर उस की इस्लाह फर्माते है । और मरने से पहले पहले अगर इस्लाह हो जाए और इन्सान साफ सुथरा हो कर अपने रब के हुजूर पश होजाए तो इस से बडी और कौन सी नेमत हो सकती है ?

मकामात को बलदी

हकीकत यह है के हम निकम्मे और नालायक हैं । कुर्बे इलाही हासिल करने के लिए जिस दर्जे की मेहनत करनी चहिए वह नहीं करते । ताहम शैख से मुहब्बत और राब्ता दरजात की बलन्दी और अल्लाह का कुर्ब हासिल करने का आसान तरीन रास्ता है । इस बात को समझने के लिए एक मिसाल बयान की जाती है ।

एक चूंटी के दिल में ख्वाइश पैदा हुई के में किसी तरह खाना-ए-काबा पहुंचू । और बैतुल्लाह की जियारत करुं । लेकिन वह तो वहाँ से कोसों दर थी । वह रोजाना सोचती रह जाती के मैं छोटी सी मखलूक हुँ भला वहाँ कैसे पहुंच सकती हुँ एक दफा जहाँ वह रहती थी कबुतर का एक गौक आ गया और खेतों से दाना वगैरह चुगने लगा । चूंटी ने क्या किया के एक कबूतर के पन्जे से चिमट गई जैसे ही कबुतर ने उडान

भरी वह भी उस के साथ ही उड गई । आखिर कार कबुतर खाना काबा पहुंच गए । वह भी खाना काबा पहुंच गई । और अपनी मराद को पा लिया ।

तो शैख के साथ तअल्लुक मजबुत करने से यूं भी हो जाता है के शैख जिस मकाम पर पहुंचता है उस के साथ मजबूत तअल्लुक रखने वाला भी उस मकाम तक पहुंच जाता है ।

लेकिन अगर तअल्लुक ही कमजोर है तो फिर कैसे पहुंचेगा ? इस की दलील हदीस से मिलती है । हुजूर ﷺ ने फर्माया المرء مع من احب :

आदमी उसी के साथ होगा जिस से उस को मुहब्बत होगी ।

सहाबा कराम رضي الله عنهم यह कहते हैं के जितनी खुशी हमें यह हदीस सुन कर हुई इतनी खुशी कभी नहीं हुई । मुहद्दीसीन ने इस हदीस के बारेमे यह लिखा ह के बहुत से कम मकाम वाले लोग होंगे । लेकिन आला मकामात वाले लोगों की मुहब्बत की वजह से उन को जन्नत में उन के साथ मिला दिया जाएगा । और वह आला मकाम हासिल कर लेंगे ।

एलाने मगफिरत

बुखारी शरीफ की एक तवील हदीस है जिस में वारिद हुआ है के एक शख्स किसी वजह से अल्लाह वालों और सुलहा की मजलिसे जिक्र में थोडी देर के लिए बैठ गया । अल्लाह ने मलाइका के सामने उन जाकिरीन की मगफिरत का एलान फर्माया तो एक फरिश्ते ने कहा के फलां शख्स तो बडा खताकार है । और वह इस महफिल में वैसे ही किसी जरुरत की वजह से आ गया था । अल्लाह की तरफ से इर्शाद होता है ।

هم القوم لا يشقى بهم جليسهم وله قد غفرت

यह ऐसी मक्बूल जमाअत है के इन के पास बैठने वाला भी महरुम और शकी नहीं रह सकता । इस के लिए भी मगफिरत है :

अब बताएं के जब जिक्र व फिक्र करने वाली जमाअत में आने वाले इस गुनेहगार शख्स की भी मगफिरत कर दी जाती है जो अपनी किसी

गरज से आया हो तो जो मुरीद शैख की महफिल में तालिब बन कर आए तो जिक्र की इन मजालिस में क्या उस की मगफिरत नहीं होगी ?

इमानकी लज्जतमे इजाफा

एक हदीस में आया ह के नबी ﷺ ने इर्शाद फर्माया के जिस शख्स में यह तीन चीजें हों । वह इमान की लज्जत पाएगा ।

1) जो अल्लाह तआ़ला और रसुल ﷺ से तमाम कायनात से ज्यादा मुहब्बत रखता हो ।

2) जो किसी बन्दे से मुहब्बत करे सिर्फ अल्लाह के लिए ।

3) जो ईमान अता होने के बाद कुर्फ में जाना इतना नागवार समझे जैसे आग में जाना ।

इस हदीस पाक के मुताबिक किसी से सिर्फ अल्लाह के लिए महब्बत रखना इमान का बाइस बनता है के मुरीद को अपने शैख से जो मुहब्बत होती है वह अल्लाह ही के लिए होती है । इस का शैख की खिदमत में आना जाना भी सिर्फ अल्लाह की मुहब्बत के हासिल करने के लिए होता है । यही वजह है के इस तअल्लुक की निस्बत से अल्लाह इस बन्दे में ईमानकी लज्जत पैदा फर्मा देते हैं ।

उम्मीदे शफाअत

अगर हम किसी मुत्तबे सन्नत शैख से राब्ता मजबूत रखते हैं । तो मुमकिन ह के रोजे आखिरत उन की शफाअत की वजह से हमारी भी बख्शोश होजाए । इस लिए के अहादीस में आता है के क़ियामत के दिन अल्लाह अपने बाज कामिलीन को शफाअत का हक देंगे । और वह अपने साथ कितने ही लोगों के जन्नत में जाने का सबब बन जाएगे ।

एक दफा नबी ﷺ ने तीन दिन तक तखलिया एखतियार किया और सिवाए नमाजों के अपने हुजरे से बाहर तशरीफ नहीं लाए । तीसरे दिन जब तशरीफ लाए तो सहाबा ने पूछा के या रसुलल्लाह ﷺ ऐसा तो कभी नहीं हुआ । आप ﷺ ने फर्माया में अल्लाह तआ़ला की बारगाह में

सर रख कर रोता रहा गिड गिड़ाता रहा और उम्मत की बख्शिश की दुआ करता रहा । आखिर अल्लाह तआ़ला मुझ से यह वादा फर्माया के क़ियामत के दिन वह मेरी उम्मत के सत्तर हजार बन्दों को बगैर हिसाब किताब जन्नत में ले जाऐंगे और फिर उन सत्तर हजार बन्दों को यह एखतियार देंगे के वह अपने साथ सत्तर हजार बन्दों को बगैर हिसाब किताब जन्नत में ल जाऐं । अब सोचें के अगर हम भी अपने अकाबिर से तआल्लुक को मजबत करेंगे तो मुमकिन है के हमारा नम्बर भी लग जाए ।

सहाबा इकरामसे मुशाबहत

हदीस में आया है के اَلْعلماء وَرَثَۃُ الْاَنْبِیاء उलमा अंबिया के वारिस है । और फर्माया के जिस ने किसी आलिम की ताजीम की ऐसा ही है जैसे उस ने मेरी ताजीम की । आज के दौर में मुत्तबे सुन्नत मशाइख ही नबी ﷺ के हकीकी वारीस है आज इन मेहफिलों में बठना ऐसा ही है जैसे आप ﷺ की मेहफिल मे बैठना ।

हम किताबों में सहाबा कराम की नबी ﷺ से इश्क व मुहब्बत और जांनिसारी की दास्तानें पढते हैं । इन की वाज व नसीहत की मेहफिलें उनकी नशिश्त और उनके नबी ﷺ के अदब के वाकिआत पढते हैं । लेकिन इन वाकिआत की हकीकी रुह और सहाबा इकराम رضی اللہ عنہ की कैफियात का सही तसव्वुर व एहसास वही बन्दा कर सकता है जो आज किसी शैख की मेहफिल में जाता है । और शैख की खिदमत में रहता है । जैसे वह साहाबा की इन कैफियात से हिस्सा पाता है । और जो बेचारे इस नेअमत से महरुम हैं वह सहाबा की इन कैफियात को समझने से महरुम हैं । क्योंकी फकत पढ लेना और चीज है और इस पर से गुजरना और चीज है ।

दुआ है के अल्लाह तआ़ला हमें अपने मशाइखकी हकीकी मुहब्बत अता फर्मादे और इत्तिब कामिल नसीब फर्मा दे ।

اُحِبُّ الصَّالِحِیْنَ وَلَسْتُ مِنْھُمْ لَعَلَّ اللہَ یَرْزُقُنِیْ صَلَاحاً

सालीकीनों के लिए हिदायात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

صِبۡغَةَ اللّٰهِ وَمَنۡ اَحۡسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبۡغَةً وَّنَحۡنُ لَهٗ عٰبِدُوۡنَ

अल्लाह का रंग और अल्लाह से बेहतर रंग किस का हो सकता है और हम उसी की इबादत करते हैं

हिदायात बराए सालिकीन :

सिलसिला के मामुलात व वजाइफ की तफ्सील तो अव्वल हिस्से में बता दी गई । अब जरुरी मेहसुस होता है के तालिबीन की रेहनुमाई के लिए बाज उसली बातें भी बयान कर दी जाए के जिन पर अमल करना बहुत जरुरी है । जिस तरह कोई बीमार डॉक्टर के पास जाए तो वह इसे दवा भी देता है और साथ कुछ परहेज भी बताता है । मामुलात नकशबंदीया की हैसियत दवा को मानिन्द है और इन बातों की हैसियत परहेज की मानिन्द है । जिस तरह परहेज पर अमल ना किया जाए तो दवा का खातिर फायदा नहीं होता । इसी तरह इन बातों पर अमल ना करने से मामुलात के अनवारात व तजल्लीयात जाया होने लगते हैं । और अगर अमल कर लिया जाए तो नुरुन अला नुर होता है । और सालिक की बातनी तरक्की में इजाफा हो जाता है । वह बातें इस तरह हैं ।

सिलसिला आलिया नकशबंदीया के मामुलात व वजाइफ पर अमल करने में हमेशा अल्लाह की रजा हासिल करने की नियत रखें । उन के करने में अनवारात व तजल्लीयात का रंग देखना मकसुद हो । ना वज्द व सरुर हासिल करना । और ना बुजर्ग बनना मतलूब हो ।

अवराद व अजकार हमेशा बावुज होकर करें । बल्के सालिक को तो हर वक्त बावुज रेहने की आदत को अपनाना चाहिए । जब जाहिरी तहारत को एखतियार करेंगे तो अल्लाह तआ़ला बातिनी सफाई भी इनायत फर्मा देंगे ।

अवराद व अजकार हमेशा अहले मुहब्बत और अहले इश्क की तर्ज पर मुहब्बत और जौक व शौक से करें । ना के सिर्फ वजीफा पुरा करना मकसुद हो ।

जिक्र व अजकार करने से पहले तवक्कुफ करें । और अपनी फिक्र और ख्याल को हर दुनियावी चीज से हटायें । ताके यकसुई हासिल होजाए । बल्के बेहतर तो यह ह के जिक्र व मुराकबा से पेहले मौत को याद कर के दुनियासे कटनेकी बातें सोचे ताके दिल गर्म हो जाए । और वजाइफ के करने में जौक व शौक पैदा हो जाए इस मामलेमे शैख से तअल्लुक और मुहब्बत का खयाल भी फायदेमंद हो सकता है ।

अजकार व मुराक़बात म अन्वारात व तजल्लीयात का नजर आना अस्बाक के करने में हासील हो सकता है । मक्सुद नहीं हैं । इन के पीछे ना पडना चाहिए । अगर आप बाकाइदगी से मामुलात करते है तो अल्लाह की तरफ से इस तौफीक का हासिल हो जाना ही बहुत बडी इनायत है । और यह अलामत है अल्लाह की तरफ से कुबूलीयत की ।

खाबों क शहजादे ना बनें । बाज खाब सच्चे होते हैं । और बाज खयालो औहाम होते हैं । इन को कामयाबी और बशारत का मदार करार नहीं दिया जा सकता । कामयाबी का मदार यही है के आप को शरीअत से मुहब्बत और इस की पाबन्दी किस हद तक नसीब है ।

मुखतलिफ औकात और हालात में पढी जाने वाली तमाम मस्नुन दुआओं को याद कर ले । और उन को अपने अपने मवाके पर पढने की आदत डालें । यह चीज दवामे जिक्र यानी वकुफ कल्बी में फायदेमंद साबित होती है । मस्नुन दुआओंके लिये फकीर की कुतुबे शजरा तैय्यबा और प्यारे रसुल ﷺ की प्यारी दुआएं मुलाहजा करें ।

शैख से अपने तअल्लुक और राब्ता को मजबुत बनाएं । खत व किताबत या टेलीफौन पर अपने अहवाल बताते रहे । और वक्तन फवक्तन इन की खिदमत में अपनी इस्लाह की नियत से हाजिर होते रहें । शैख के आदाब का बहुत खयाल रखें के थोडी सी बेअदबी इस राह म सिम्मे कातिल की हैसियत रखती है । आदाब शैख फकीर की कुतुबे तसव्वुफ व सुलूक और शजरा तैय्यबा से मुलाहजा करें ।

सुन्नते नबवी पर अमल करने को अपनी आदत बनाएं । रोजमरा मामुलात में जिस कदर नबो ﷺ से मुशाबेहत होगी इसी कदर मेहबूबियत में इजाफा होगा । और वुसुल इलल्लाह जल्द नसीब होगा ।

हलाल और तैय्यब रिज्क का एहतमाम करें । मुश्तबा लुकमा से परहेज करें । इस से इबादात गैर मकबुल हो जाती हैं । और बातिन का नूर जाता रहता है । दिल गैर से खाली हो । और पेट हराम से खाली हो तो हर इस्म इस्मे आजम होता हैं ।

फर्ज नमाजों का खूब एहतमाम फर्माएं । तमाम नमाजें मस्जिद में तकबीर उला के साथ और हुजूरे कल्ब के साथ अदा करें । अव्वल हुजूरी नमाज की यह है के मआनी समझ कर नमाज पढे । अगर हम जाहिरी तौर पर नमाज को दुरुस्त करलेंगे तो बातिनी दुरुस्तगी अल्लाह तआ़ला फर्मा देंगे । जो बन्दा अपनी नमाज को दुरुस्त नहीं कर सकता वह बाको मआमलात को कैसे दुरुस्त रख सकता है ।

तहज्जुद की नमाज अपने उपर लाजिम कर लें । राहे तरीकत में यह नवाफिल फर्ज की मानिन्द हैं । अल्लाह तआ़ला ने दाऊद عليه الصلاة والسلام को यह वही नाजिल की के बन्दा मेरी मुहब्बत का दावा करे । और रात आए तो लम्बी तान कर सो जाए । वह अपने दावा में झुठा हैं ।

अत्तार हो रुमी हो राजी हो गजाली हो

कुछ हाथ नहीं आता बे आहे सहर गाही

अपनी नजर की हिफाजत करें । और इसे नजायज जगह पडने से बचाएं । एक लम्हा की बदनजरी इन्सान की सालों की मेहनत को जाया कर देती है ।

गैर शादी शुदा हजरात को चाहिए के रोजे रखा करें । इस से तो नफ्स और शहवत मगलूब होंगे । दुसरा बातिन में नूर पैदा होगा ।

शादी शुदा हजरात को चाहिऐ के अपनी अजदवाजी जिम्मेदारीयों को बहुस्ने खुबी शरीअत व सून्नत के मुताबिक पूरा करते रहें । और अपने अहले खाना के हुकूक की अदाइगी का ख्याल रखें ।

बहुत से सालिकीन को देखा के जिक्र व इबादत में अगरचे खुब मेहनत करते हैं लेकिन घर के मामलात में कोताही करते हैं । लिहाजा हुकूकुल इबाद का खयाल ना रखन की वहज से सुलूक में रुके हुए होते हैं । इस सिलसिले में हमारी किताब मिसाली अजदवाजी जिन्दगी के सुनहरी उसूल से रहनुमाई हासिल करें ।

दुसरों की दिल दुखाने से बचें । शिर्क के बाद सब से बडा जुल्म किसी का दिल दुखाना है ।

हर मआमले को अल्लाह की तरफ से समझें । और हर हाल में अपनी तवज्जोह अल्लाह की तरफ रखें । कोई नफा नही पहुंचा सकता अगर अल्लाह ना चाहे । और कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता अगर अल्लाह ना चाहें । ना कोई बन्दे को बीमार कर सकता है । और ना बन्दे का रिजक रोक सकता है । लिहाजा जब भी कोई परेशानी हो कोई दुख तकलीफ हो तो आमिलों और तावीज गन्डों की तरफ भागने की बजाए अल्लाह तआ़ला को बारगाह में झोली फैलाए । अल्लाह तआ़ला स मांगें और अल्लाह तआ़ला को मनाऐं । हर किस्म की परेशानी के लिए । और जर्र से हिफाजत के लिए । एक ही अमल काफी है जो मस्नुन भी है । और मुजर्रब भी इस का मामूल बनाए । वह यह के अव्वल व आखिर दरुद शरीफ के साथ सुरह फातिहा और चरो कुल पढ कर दम करें । पानी पर दम कर के पिएं और पिलाऐं । और रात को पढ कर सोया करें । इन्शाअल्लाह हर मुजिर चीज से हिफाजत रहेगी ।

तक्वा पर मेहनत करें। विलायत का तअल्लुक इमान और तक्वा से है । और दोनों का तअल्लुक दिल से है ।

जिक्र अजकार के साथ कुछ मुजाहदा नफ्स भी करना चाहिऐ । इस की चार किस्मे हैं ।

(1) किल्लते तआम

(2) किल्लते मनाम

(3) किल्लते कलाम

(4) किल्लते इखतिलात मअल अनाम

किल्लते तआम का मतलब है के कम खाना । आज कल कवी के कमजोर होने की बिना पर हम यह तो नहीं कहते के मुतकद्दमीन की तर्ज पर अपने आप को भुका रखा जाए । बल्के ज्यादा कुव्वत बख्श गिजाएं इस्तेमाल करें ताके काम बेहतर कर सकें । अलबत्ता चटोरे पन छोड दिया जाए के हर वक्त मुंह चलाने की आदत हो । और फुजूल चीजें महज तफरीहन(रिफ्रेशमेंट के तौरपर) खाई जाएं ।

किल्लते मनाम का मतलब है के कम सोना इस में भी ज्यादा मुबालगा ना किया जाए । रात को जल्दी सोकर सुबह तहज्जुद के वक्त उठने की आदत डालें । इस में बदन के लिए राहत भी है । और सुन्नत का सवाब भी है ।

किल्लते कलाम और किल्लते इखतिलात मअल अनाम का मतलब है के कम बोलना । और लोगों से कम मिलना । इस मुजाहदे को अलबत्ता इखतियार किया जाए । के इसमें सहत पर असर नहीं पडता । अलबत्ता नफ्स पर बहुत असर पडता है जो के जिसकी तलब होती है । कलाम और इखतिलात में किल्लत तो हो तर्क ना हो । इस का मतलब यह है के वह गुफतगु और मुसाहबत जिस से उखरवी फाइदा हो । उस को एखतियार करें । और लायानी को छोड दें । इस से इन्सान की वह तमाम जिम्मेदारियां भी अदा हो सकेंगी जो इन्सान पर फर्ज होती हैं ।

जिक्र अजकार करने में इन्सान को कभी कबज और कभी बस्त की हालत भी पेश आती है । और यह हालतें अदलती बदलती रहती हैं ।

कबज की हालत में एक किस्म की बेजौकी(बेमजा) पैदा होती है जिस से अजकार में जी नहीं लगता । और सालिक पर मायूसी की कैफियत पैदा होती है । इस हालत में बददिल होकर असबाक को छोड ना देना चाहिए । इस हालत में इस्तगफार की कसरत करें । शैख की सोहबत में जाएं । और मामुलात पाबन्दी से करते रहें । अल्लाह से उम्मीद रखगे । और इस्तकामत एखतियार करेंगे । तो ज्यादा अज्र पाएंगे ।

बस्त की हालत में सालिक को अपनी कैफियात बहुत अच्छी मालुम होती हैं । वज्द(अल्लाह की याद मे गुम होना) व जौक(मजा आना) और जज़्ब व शौक की हालत पैदा होती है । इन्सान की हुज़ूरी की कैफियत

में इज़ाफा हो जाता है । इस हालत में अल्लाह तआ़ला के इनआम पर शुक्र कर । इस से नेमत में और एजाफा होगा । लेकिन अपनी इस हालत पर ना इतरायें । और आजिजी एखतियार करें ।

तसव्वफ व सुलूक की मेहनत स अगर आप को शरीअत व सुन्नत पर इस्तकामत नसीब हो रही है तो समझें के मेहनत वसुल हो रही है । अगर ऐसा नहीं हैं तो समझ लें के सब वज्द व हाल और जज़्ब व शौक बेमाना हैं ।

दुआ है के अल्लाह तआ़ला हमें असबाक की पाबन्दी और इन तमाम बातों पर अमल करने की तौफीक अता फर्मा दे । और हमें अपने प्यारे बन्दों में शामिल फर्मा ले । आमीन सुम्मा आमीन :

واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمین